फरवरी 2014

दादावाणी

मूल्य : ₹ १०

यह नोंध तो संसार ही खड़ा करती है। मोक्ष में जाना और नोंध रखना, दोनों साथ में नहीं हो सकते। मोक्ष में जाना हो तो नोंध छोड़नी पड़ेगी। नोंध-बही निकाल देनी पड़ेगी।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ९, अंक : ४
अखंड क्रमांक : १००
फरवरी २०१४

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

नोंध से मोक्षमार्ग में जोखिम अपार

संपादकीय

ज्ञानीपुरुष परम पूज्य दादा भगवान द्वारा हमें आत्मज्ञान की प्राप्ति होने के बाद मोक्ष का निश्चय होता है, लक्ष्य बंधता है। इस लक्ष्य को सफलतापूर्वक समाप्त करने के लिए पुरुषार्थ में कईं बार ज्ञान जागृति नहीं रहती है। फलस्वरूप इच्छित (धारणा के अनुसार) परिणाम नहीं मिलता। उसका कारण क्या हो सकता है? तो कहे कि मोक्ष के ध्येय (लक्ष्य) को सिद्ध करवानेवाले साधक कारणों का पता होने पर भी, उस रास्ते में आनेवाले गुप्त भय स्थानों की जानकारी नहीं होने से, पुरुषार्थ में कमी रह जाती है। मोक्षमार्ग में ऊपर चढ़नेवाले रास्तों का जितना महत्व है उससे ज़्यादा फिसलन भरे स्थानों की जानकारी और तकेदारी रखना अनेक गुना महत्व की है। उसके बगैर चाहे जितना भी पुरुषार्थ करें, फिर भी यथार्थ परिणाम प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

दादाश्री ने मोक्षमार्ग के जिन रुकावट डालनेवाले कारणों का वर्णन किया है उसमें '*नोंध*' वह एक ऐसा दोष है कि जो आसानी से दृष्टि में नहीं आता। जाने-अन्जाने इस दोष को पोषण मिलता रहता है। और इसीलिए इस दोष से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। पूज्य दादाश्री कहते हैं कि अज्ञानता की सबसे बड़ी निशानी कौन सी है? तो कहे '*नोंध*'। यह *नोंध* रखने से ही संसार खड़ा हो जाता है। ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात भी यदि ये *नोंध*पोथी रहती है तो संसार जैसा था वैसा ही कर देती है। वापस संसार को हरा-भरा कर देती है। किसी भी प्रकार की *नोंध,* वह राग-द्वेष करवाती है। *नोंध,* वह कर्ता को देखती है और अभिप्राय वस्तु को देखती है। यदि कोई गाली दे गया हो तो उसकी *नोंध* नहीं होनी चाहिए। *नोंध* ली मतलब सामनेवाले को कर्ता देखा। और कर्ता तो व्यवस्थित है। अत: अब यह ज्ञान प्राप्त होने के बाद *नोंध* रहनी ही नहीं चाहिए। जब तक *नोंध* रहती है, तब तक *पुद्गल* पक्ष ही रहता है और सत्ता भी *पुद्गल* की होती है। उस समय आत्मा की सत्ता नहीं होती। हम तो आत्मा हैं तो फिर पुद्गल की सत्ता में रहना किस तरह पुसाए? इसलिए इस दोष के सामने निरंतर जागृति होनी आवश्यक है।

वास्तव में यह *नोंध* किस प्रकार से ले ली जाती है? जिस समय किसी भी निमित्त से खुद को थोड़ी सी भी अरुचि हो गई तो, *नोंध* हो जाती है। अरुचि होने पर यदि *नोंध* नहीं करे तो मोक्ष हो जाए। वह मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी है। जिस सीढ़ी से चढ़ा जाता है, इन्सान उसी सीढ़ी से उतरता है। फिर ऊपर कब पहुँच पाएगा? *नोंध* लेते हो उस समय आप सामनेवाले को तंत रखकर देखते हो। तंत बहुत जोखिमकारक चीज़ है। मोक्ष में जाना हो और *नोंध* रखें, दोनों एक साथ नहीं हो सकता। यदि मोक्ष में जाना हो तो *नोंध* लेना छोड़ना पड़ेगा।

नोंध लेने से मन डंकीला (प्रतिशोधी) बन जाता है। फिर वह खुद को भी डंक मारता है और अन्य को भी डंक मारता है। इसलिए हमें वीतरागों के सिद्धांत को समझकर चुपचाप वीतरागों के मार्ग पर चलने जैसा है। अनादिकाल से प्रकृति में *नोंध* करने की जो बुरी आदत पड़ गई है, उससे छुटकारा पाने के लिए दादाश्री कहते हैं कि यह *नोंध* प्रकृति करती है और 'हम' प्रकृति से जुदा है। इसलिए हमें उसे जुदा जानना है। प्रकृति स्वभाववश *नोंध* करेगी, लेकिन उसके साथ हमारी सहमति नहीं होनी चाहिए। यदि सहमत (एक राय) नहीं हुए तो *नोंध* भी उड़ जाएगी। यह *नोंध* करने की आदत, विज्ञान को समझे बगैर छूटेगी नहीं।

दादाश्री उद्बोधित प्रस्तुत संकलन में, *नोंध* का अद्भूत तात्विक विश्लेषण प्रस्तुत होता है। जिसका समझपूर्वक अभ्यास, मोक्षमार्ग के प्रवासी को *नोंध* के सामने जागृतिपूर्वक पुरुषार्थ शुरू करने में सहायक बना रहेगा।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

नोंध से मोक्षमार्ग में जोखिम अपार

जहाँ *नोंध*, वहाँ सत्ता *पुद्गल* की

प्रश्नकर्ता : *नोंध* करनेवाली (अत्यंग राग अथवा द्वेष सहित लंबे समय तक याद रखना, नोट करना) प्रकृति को विलय करने के लिए अक्रम विज्ञान क्या कहता है?

दादाश्री : जगत् के लोग *नोंध* रखते होंगे क्या?

प्रश्नकर्ता : अवश्य।

दादाश्री : यही काम है। *नोंध* रखने का ही धंधा। मेरे साथ ऐसा किया, वैसा किया। अज्ञानता की सब से बड़ी निशानी क्या है? तो वह है *नोंध*। क्या तू अभी भी *नोंध* रखता है?

प्रश्नकर्ता : *नोंध* करना, वह तो इस प्रकृति का सबसे बड़ा दोष है, अब आप ही कोई हल सुझाइए।

दादाश्री : हमारा ज्ञान प्राप्त होने के बाद लेकिन सिर्फ यह *नोंध* ही नहीं रहनी चाहिए बाकी कुछ भी रहे भले ही। *नोंध* और *पुद्गल* (जो पुरण और गलन होता है) दोनों साथ-साथ ही खड़े रहते हैं। जब तक *नोंध* रहे, तब तक वह *पुद्गल* ही रहता है। तब सत्ता भी *पुद्गल* की ही होती है, आत्मा की सत्ता नहीं होती।

फर्क *नोंध* और अभिप्राय में

प्रश्नकर्ता : क्या *नोंध* और अभिप्राय एक ही कहलाते हैं?

दादाश्री : *नोंध* करना और अभिप्राय, वह अलग चीज़ है, एक नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह किस प्रकार से अलग है?

दादाश्री : *नोंध* तो, जब कोई व्यक्ति किसी भी बात का वर्णन करता है, तब हम उसकी *नोंध* ले लेते हैं। *नोंध* मतलब *नोंध*-बही और अभिप्राय मतलब उसे जो ओपिनियन देते हैं, वह है। ओपिनियन देना वह अलग चीज़ है और *नोंध* रखना वह अलग है।

प्रश्नकर्ता : *नोंध* और अभिप्राय में क्या फर्क है?

दादाश्री : है न फर्क! *नोंध* से संसार खड़ा होता है और अभिप्राय से मन खड़ा होता है। *नोंध* पूरा संसार खड़ा कर देती है, पूरा ही! जैसा था वैसा ही बना देती है, हरा-भरा कर देती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह *नोंध* करेगा तब जाकर अभिप्राय बैठेगा न?

दादाश्री : वह ठीक है लेकिन *नोंध* का मतलब अभिप्राय नहीं है। अभिप्राय तो हम *नोंध* लेने के बाद में देते हैं। *नोंध* लेकर उसके बाद अच्छा-बुरा कैसा भी अभिप्राय देते हैं, लेकिन अगर *नोंध* लेंगे तो! लेकिन *नोंध* लेना ही सबसे बड़ा गुनाह है। अभिप्राय को तो चलाया जा सकता है।

अभिप्राय से तो मन खड़ा हुआ। उसका

निकाल फिर हमें खुद को ही कर देना है। लेकिन यह *नोंध* तो वापस संसार ही खड़ा करती है। *नोंध* में खोया हुआ कभी वापस नहीं आता।

जोखिम समाया *नोंध* में

प्रश्नकर्ता : यह जो *नोंध* ली जाती है, वह पहले ली जाती है और फिर रूपक में बोलकर उसका अभिप्राय देते हैं?

दादाश्री : *नोंध* ली इसलिए फिर उस 'साइड' चला। देह की 'साइड' चला सबकुछ, आत्मावाली 'साइड' बंद हो गई, इसलिए इस पक्षवाला हो गया। तब फिर वह आत्मा बंद हो गया, उस घड़ी आत्मा नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : यानी जब *नोंध* लेते हैं, उस घड़ी अभिप्राय है या...

दादाश्री : अभिप्राय में हर्ज नहीं है। अभिप्राय इतना बड़ा जोखिम नहीं है। वह मन बनाता है बस उतना ही, लेकिन जोखिम तो सारा *नोंध* का है।

ओपिनियन दिए बगैर भी *नोंध* रखी जा सकती है।

प्रश्नकर्ता : ओपिनियन दिए बगैर, *नोंध* कैसे रखी जा सकती है?

दादाश्री : अभी हमें रोज़ जो चाय मिलती है, उसके बजाय यदि जल्दी बुलाने आएँ तो हम *नोंध* रखते हैं कि भाई, यह व्यक्ति हमें चाय के लिए जल्दी बुला रहा है। *नोंध* कर लेते हैं हम। अब इसमें भी उसका किसी भी प्रकार का कोई ओपिनियन नहीं होता। ज़्यादातर *नोंध* में ओपिनियन होता ही नहीं है। *नोंध,* को अलग ही चीज़ कहा गया है *नोंध* मतलब नोटेड, यानी कि नोट-डाउन करना, वही *नोंध* है और ओपिनियन, वह ओपिनियन है।

प्रश्नकर्ता : जब कोई गाली देता है, तब पहले *नोंध* करता है न? तब क्या अभिप्राय के बगैर *नोंध* ले सकता है?

दादाश्री : हाँ, अभिप्राय के बगैर *नोंध* रखी जा सकती है कि 'भाई, इस व्यक्ति को बोलना नहीं आता, उल्टा बोल गया,' ऐसी *नोंध* कर लेते हैं हम। सीधा कह जाए तो सीधी *नोंध* कर लेते हैं।

जहाँ राग-द्वेष हों, वहाँ अभिप्राय बन जाते हैं

प्रश्नकर्ता : अब किसी भी प्रकार के खराब भाव के बिना, जैसा है वैसा अभिप्राय बता दें, तो उसमें क्या बुरा है?

दादाश्री : जैसा है वैसा कह दो, वह अधिकार है आपको? आपके पास वह दृष्टि है ही नहीं। यथार्थ दृष्टि के बिना तो नहीं बोल सकते। अभिप्राय शब्द तो पूरा ही खत्म हो गया। अभिप्राय तो, पुद्गल, आत्मा और छः तत्व ही हैं। सिर्फ वही और कोई अभिप्राय नहीं हो ऐसा होना चाहिए।

वर्ना अभिप्राय तो यदि कोई राग-द्वेष होंगे तभी अभिप्राय बनता है। वर्ना अभिप्राय नहीं बनता। पसंद या नापसंद हो तभी अभिप्राय बनता है।

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय देना, क्या उसी को पंचायत करना कहते हैं?

दादाश्री : हिन्दुस्तान के हों यो फॉरेन के हों, लेकिन सभी जगत् की पंचायत में पड़े हैं। खुद की पंचायत करनी थी, उसके बजाय जगत् की (परायी) पंचायत करने में पड़ गए, इससे टेन्शन बढ़ गए। जो खुद की पंचायत में पड़ जाए, उसे टेन्शन नहीं होता।

हमें यदि चाय अच्छी नहीं लगी हो तो हम अभिप्राय देते हैं कि यह चाय अच्छी नहीं है। यानी हम चाय की बुराई किए बगैर नहीं रहते। यह तो कहाँ रहा, लेकिन *नोंध* लेते हैं। इस तरह हम

बनानेवाले व्यक्ति की भी बुराई किए बगैर नहीं रहते और चाय की बुराई करते हैं तो उससे चाय के साथ जो शादी हो चुकी है, वह बंद हो जाएगी न? नहीं। यानी कम लफड़ा होना अच्छा है। किसी भी चीज़ का लगाव कम हो तो अच्छा है। और यदि है तो हम मना नहीं कर रहे हैं। हम तो, इस अभिप्राय में या फिर जो *नोंध* लेते हो, उसके लिए मना कर रहे हैं। आपको जो भाए वह खाओ-पीओ, बासुंदी बनाना न! बासुंदी बनाकर खाओ, उसकी हम *नोंध* नहीं रखते। अपने यहाँ उस पर आपत्ति नहीं है। अपना विज्ञान और कोई आपत्ति नहीं उठाता। इस *नोंध* की बहुत ही जोखिमदारी है, लेकिन अब अगर *नोंध* की जोखिमदारी समझे तो न!

नोंध लेने का आधार

प्रश्नकर्ता : *नोंध* वास्तव में किस तरह से ली जाती है, उसका एक उदाहरण दीजिए न!

दादाश्री : यहाँ रास्ते पर आप जा रहे हों और कोई आपसे कहे कि, ''इन 'दादा' के पीछे नहीं घूमो तो चलेगा। बिना काम के आप बहुत परेशानी उठाते हो।'' और थोड़ा-बहुत एकाध-दो शब्द ऐसे कहे कि जो आपको पसंद नहीं आएँ ऐसे, तब फिर आप *नोंध* ले लेते हो कि 'ऐसा इंसान, नालायक इंसान कहाँ से मिल गया?' ऐसी *नोंध* ले लेते हो। या फिर 'पसंद आए' ऐसा हो, तब भी *नोंध* लिए बगैर नहीं रहते। यानी 'पसंद नहीं हो' तब भी *नोंध* लेते हैं और 'पसंद हो' तब भी *नोंध* लेते हैं।

थोड़ी भी रुचि उत्पन्न हुई कि *नोंध* ले लेते हैं। अरुचि होने पर भी *नोंध* नहीं ले तो वह मोक्ष देगा। किसीने हमें अरुचि करवाई और *नोंध* नहीं लें तो मोक्ष होगा। वह मोक्ष की सीढ़ी है। वापस उसी सीढ़ी से वह उतर जाता है। जिस सीढ़ी से चढ़ा जा सकता है, उसी सीढ़ी से उतर जाता है इंसान।

नोंध यानी नोटेड... ध्यान में रहता है

नोंध यानी खुद, इंग्लिश में क्या कहते हैं कि नोटेड।

प्रश्नकर्ता : नोटेड अर्थात् ध्यान में रखना है न?

दादाश्री : ध्यान। ध्यान में रहता है कि 'वह ऐसा कर गया था।' वह याद रहता है। अर्थात् *नोंध* करना वह ध्यान में रखने के बराबर है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन वह समझ में नहीं आया। उसका कोई उदाहरण देकर समझाइए न!

दादाश्री : इसका क्या उदाहरण दूँ?

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं, वह ध्यान और *नोंध* का। *नोंध* तो जो यह कर्तापने में ले गए न?

दादाश्री : *नोंध* यानी ध्यान में रखने जैसी चीज़ है। ध्यान में रखने जैसी, ध्यान में। जैसे हम किसी चीज़ को याद रखने के लिए निशान लगाते हैं न, यह उसके जैसा है ध्यान में रखने तक ही। यह व्यक्ति सब्ज़ी ले गया था खेत में से। ऐसा *नोंध* में रखते हैं। उसे हम चोर नहीं कहेंगे। यदि चोर कहेंगे तो वह अभिप्राय कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, जब दूसरी बार वह व्यक्ति हमारे सामने आए....

दादाश्री : तब भी *नोंध* रखता है।

प्रश्नकर्ता : फिर बाद में, वह *नोंध* हाज़िर हो जाती है न कि यह ले गया था ऐसा?

दादाश्री : नहीं, वह एकदम, तुरंत अभिप्राय नहीं देता। सिर्फ *नोंध* रखता है कि इससे सावधान रहना वर्ना अभिप्राय दे देगा। फिर अभिप्राय देने के बाद अभिप्राय कहलाता है, लेकिन जहाँ तक हो सके वहाँ तक अभिप्राय नहीं देता, *नोंध* रखता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, यदि यह

एकबार सब्ज़ी ले जानेवाला, जब हमारे सामने दूसरी बार आएगा तो उस समय हमने जो *नोंध* रखी है, वह *नोंध* तो वापस हाज़िर हो जाएगी न?

दादाश्री : ये *नोंध* की हो, तब भी दुबारा *नोंध* कर सकता है लेकिन अभिप्राय तो फिर बहुत देर बाद देता है। अभिप्राय तुरंत नहीं दे देता। *नोंध* लेना तो बहुत अलग चीज़ है। यह जो मैं कह रहा हूँ, वैसा भी नहीं है। वह यों मेरी समझ में आ जाता है, लेकिन उसे व्यक्त करना थोड़ा कठिन लगता है। नीरूबहन से कई बार कहा है कि *नोंध* मत रखना, तो वे फिर समझ जाती हैं।

मैं कहता भी हूँ और उसे वह समझ भी जाती हैं। वह समझ जाती हैं कि इसके लिए *नोंध* रखी, इसीलिए झमेला हो गया।

नोंध कर्ता को देखता है और अभिप्राय चीज़ें देखता है

प्रश्नकर्ता : दादा, बात इस तरह निकली थी कि *नोंध* कर्ता को पहुँचती है और अभिप्राय चीज़ को पहुँचता है। 'कढ़ी खारी है,' ऐसे *नोंध* करना, 'कढ़ी खारी है' वह अभिप्राय। तो कहते हैं कि 'कढ़ी खारी है।' वह अभिप्राय इतना जोखिमभरा नहीं है। लेकिन जो 'कढ़ी बनानेवाला' है उसकी *नोंध* रखना, वह ज़्यादा जोखिमभरा है।

दादाश्री : *नोंध* मतलब, मनुष्य कर्मों के उदयाधीन घूमता है। और कर्म के उदय के कारण ही आपके साथ जिद करे और उसकी आप *नोंध* रखते हो, जबकि मेरे साथ कोई हठ करे फिर भी मैं उसकी *नोंध* नहीं रखूँ। अभिप्राय नहीं होता है वहाँ पर। अभिप्राय यानी ओपिनियन देना कि यह व्यक्ति ऐसा ही है, या फिर कढ़ी खारी ही है। जबकि *नोंध* वह सिर्फ 'नोटेड' ऐसी चीज़ है।

अब कुछ लोगों को लोगों के लिए अभिप्राय नहीं होता लेकिन फिर वह *नोंध* अधिक रखता है, सिर्फ *नोंध* रखता है। उस *नोंध* से क्या होता है? वह डंकीला मार गया हो न, तो फिर अपना मन डंकवाला बन जाता है। इसलिए किसी की *नोंध* मत रखना, कर्म के उदय से वह बेचारा भटकता रहता है। *नोंध* तो अगले जन्म के लिए संसार खड़ा कर देती है। *नोंध* मन पर नहीं चढ़ती न ही *नोंध* से मन बनता है। *नोंध* से तो डंकीला हो जाता है, डंक रहता है उससे। बहुत *नोंध* इकट्ठी हो जाए न तो वह डंक मारे बगैर नहीं रहता। वह डंक मारता है, बदला लेता है।

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय और *नोंध* के बीच का फर्क ज़रा और 'डिटेल' में समझना है।

दादाश्री : अभिप्राय थोड़ा बहुत रहा होगा तो हर्ज नहीं है। *नोंध* तो एक 'सेन्ट' भी नहीं रहनी चाहिए। *नोंध* अर्थात् पुद्गल। *नोंध* तो खास पुद्गल पक्षी ही है। *नोंध* रखने से फिर था वैसा का वैसा ही बन जाता है। जिसने 'ज्ञान' नहीं लिया हो और लिया हो, उनमें कोई फर्क ही नहीं रहे, वह कहलाती है *नोंध*।

प्रश्नकर्ता : लेकिन किसी भी चीज़ की *नोंध* लें तभी अभिप्राय बैठेगा न?

दादाश्री : अभिप्राय तो उसके पीछे है ही। लेकिन अभिप्राय होगा तो शायद कभी चला लेंगे, लेकिन *नोंध* नहीं होनी चाहिए। अभिप्राय दिया मतलब, अभिप्राय से तो सिर्फ मन ही बनता है। आपने ऐसा अभिप्राय दिया है कि 'कढ़ी खारी है' तो मन बनेगा। लेकिन *नोंध* तो कढ़ी बनानेवाले को भी गुनहगार ठहराती है।

प्रश्नकर्ता : *नोंध* अर्थात् किस प्रकार की *नोंध* ली जाती है उस घड़ी?

दादाश्री : 'मुझे ऐसा कह गया, फलाँ कह गया, ऐसा कह गया, वैसा कह गया' ऐसी कितने ही प्रकार की *नोंध*! ये 'चंदूभाई' होटेल में गए थे,

यदि मैं ऐसी *नोंध* करूँ तो वह कौन सा पक्ष है? पुद्गल पक्ष! बहुत जोखिम है इस *नोंध* में तो।

प्रश्नकर्ता : 'यह कढ़ी खारी है' ऐसी *नोंध* कैसे लेते हैं?

दादाश्री : *नोंध* अर्थात्, 'कढ़ी खारी है' कहते ही 'बनानेवाला कौन है' उसी पर सबकुछ जाता है। *नोंध* कर्त्ता देखता है और अभिप्राय वस्तु देखता है!

नोंध लेनेवाला हैं अहंकार

प्रश्नकर्ता : *नोंध* लेनेवाला कौन है? और अभिप्राय देनेवाला कौन है?

दादाश्री : वे दोनों ही अहंकार!

प्रश्नकर्ता : बुद्धि *नोंध* लेती है, ऐसा है क्या?

दादाश्री : बुद्धि को कोई लेना-देना नहीं है। लेने-देने का धंधा ही नहीं है न! लेने-देने का धंधा अहंकार का ही है।

प्रश्नकर्ता : अगर कुछ भी हो जाए तो, उसमें कौन सी स्थिति में *नोंध* लेता है और कौन सी स्थिति में अभिप्राय देता है? क्या पहले की पड़ी हुई आदतें सामने आती है?

दादाश्री : *नोंध* तो, व्यर्थ में, अकारण ही पूरे दिन लेता रहता है। अभिप्राय बार-बार नहीं देता कि 'यह नालायक है,' ऐसा, वैसा अभिप्राय नहीं देता।

नोंध रखने का कारण क्या है?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह जो *नोंध* रखते हैं उसका कारण क्या है?

दादाश्री : इस *नोंध* से क्या नुकसान है, वह उसे खबर ही नहीं है।

नोंध ही इस दुनिया में अनुपयोगी है। *नोंध* ही नुकसान पहुँचाती है। यदि कोई बहुत मान दे तो भी उसकी *नोंध* नहीं रखनी चाहिए और यदि कोई गालियाँ दे कि आप नालायक हो, अनफिट हो तो उसे सुनकर भी *नोंध* नहीं रखनी चाहिए। उसे *नोंध* रखनी हो तो रखे। हम यह पीड़ा क्यों उठाएँ वापस? फिर खाताबही लाकर वापस से *नोंध* रखना शुरू करें? *नोंध*बही वगैरह तो वह रखे, जिसे खाताबही रखनी हो। हम तो *नोंध* नहीं रखेंगे, तुझे जो बोलना हो वह बोल क्योंकि यदि पिछला हिसाब होगा तभी वह बोलेगा वर्ना बोलेगा ही नहीं।

नहीं रखनी चाहिए *नोंध* उदयकर्म की

प्रश्नकर्ता : यदि यह उदयकर्म के आधीन है ऐसा समझ ले तो फिर *नोंध* का तो सवाल ही नहीं उठेगा।

दादाश्री : क्योंकि यदि उदयकर्म को समझ ले तो फिर कुछ है ही नहीं, सभी उदयकर्म ही है। यह कुछ नहीं है और बेकार ही उसका प्रोटेक्शन करें, तो वह गुनाह है। उदयकर्म के समय उसका प्रोटेक्शन करना, वह गुनाह है। रिकॉर्ड बज रही हो कि 'चंदू तू चोर है, चंदू चोर है।' टेप रिकॉर्ड ऐसे बज रहा हो तो उसमें अपना क्या गया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा ठीक है।

दादाश्री : ये सभी रिकॉर्ड ही है। लेकिन फिर भी ये लोग तोलकर बोलते हैं या तोले बगैर बोलते हैं?

प्रश्नकर्ता : तोले बगैर।

दादाश्री : तो फिर क्या उसका माल लेना चाहिए? मेरे यहाँ एक आदमी आया था। तब मुझे इस रिकॉर्ड के बारे में कुछ पता नहीं था। यह तो बहुत, कोई पच्चीस साल की उम्र में एक व्यक्ति आया था, वह बहुत खराब शब्द कह गया, रिश्तेदार

था। इसलिए रिश्तेदार के साथ तो झगड़ा करना कैसे पुसाए! मैंने कहा, 'बैठिए न अब। अब वह तो भूल हो गई होगी।' और शायद हो भी गई हो हमारी। चाय-वाय पिलाई, फिर शांत किया। फिर कहने लगे 'मैं अब जा रहा हूँ'। तब मैंने कहा, 'वह पोटली लेते जाइए अपनी'। यह प्रसाद जो मुझे दिया था, वह मैंने चखा नहीं है। क्योंकि बिना तोले था न। मैं नहीं ले सकता माल बिना तोलवाला। तोला हुआ माल हो तो ही मेरे काम का है। बिना तोला माल हम नहीं लेते। मैंने कहा, 'लेते जाइए'। तब वह शांत हो गए।

नोंध रखी, वह तंत

कोई आपसे कुछ कह जाए तो वहाँ पर न्याय क्या कहता है? कि वह कर्म के उदय की वजह से आपको कह गया। अब वह उदय तो उसका पूरा हो गया, और आपका भी उदय पूरा हो गया। अब आपको लेना-देना नहीं रहा। अब आप वापस उसे तंत सहित देखते हो, तब उन्हीं कर्मों के उदय आप ले आते हो, अतः उलझन खड़ी करते हो। अब वह व्यक्ति किसी और ही कर्म में होता है उस समय। समझने जैसी बात है न? लेकिन सूक्ष्म बात है।

इसका कोई खुलासा ही नहीं हो सकता न, तंत रखा हुआ हो, उसका? और तंत रखनेवाले लोग खुलासा ढूँढें तो उसका कब अंत आएगा?

प्रश्नकर्ता : *नोंध* लेने का मतलब ही तंत रखना है न?

दादाश्री : तंत यदि रात को हुआ हो तो सुबह वापस खड़ा रहता है, याद रहता है। रात को यदि वाईफ के साथ झगड़ा हो गया हो तो, सुबह जब चाय का कप रखती है तो पटककर रखती है। तो हम समझ जाते हैं कि रात का गुस्सा अभी तक गया..

प्रश्नकर्ता : नहीं गया है।

दादाश्री : वह तंत कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : *नोंध* लेना कहा जाएगा, आपने कहा वैसे।

दादाश्री : *नोंध* ली। *नोंध* लेना वही तंत है। यानी तंत का मतलब क्या है? तंत। यानी आज से बीस साल पहले किसी व्यक्ति ने नुकसान कर दिया हो, फिर बाद में हम उस व्यक्ति को भूल चुके होते हैं। बहुत साल बीत गए इसलिए बिल्कुल भूल चुके होते हैं। लेकिन अचानक सूरत में मिल जाए, तो तुरंत ही वह तंत याद आ जाता है। जैसे फिर से वही नए सिरे से याद आ गया हो। उसे तंत कहते हैं। वह तंत निरंतर रहता है।

जगत् के दुःख खड़े हैं *नोंध* से

तंत की वजह से अभी भी *नोंध* रहती है। अब यों तो तंत नज़र नहीं आता, उसका पता नहीं चलता। लेकिन वह *नोंध* करे न, तब समझना कि तंत है यह।

कल आपका कोई अपमान कर गया हो, तब अगर उसकी आप *नोंध* करो तो मैं समझ जाता हूँ कि इन्हें तंत है। यह तंत बहुत जोखिमवाली चीज़ है। *नोंध* बिल्कुल नहीं रहनी चाहिए। यह सब कहने का भावार्थ यही है कि यों ही कुछ नहीं हो जाता, सबकुछ 'व्यवस्थित' है। जहाँ 'व्यवस्थित' है वहाँ *नोंध* कैसी? और *नोंध,* वह तंत है।

प्रश्नकर्ता : अभ्यास नहीं हो तो भी *नोंध* ले ही ली जाती है।

दादाश्री : हाँ, ले ली जाती है। लेकिन वह ली जाती है, उसे फिर हमें मिटा देना चाहिए कि 'यह जो *नोंध* ली गई वह भूल हुई है।' इतना ही बोलें न, तो छूट जाएगा। 'हम उससे अलग है' ऐसा अभिप्राय होना चाहिए। 'यह जो *नोंध* ली जा

रही है उससे हम अलग हैं,' हमारा अभिप्राय वैसा नहीं है। वर्ना अगर कुछ कहें नहीं, तो उसी मत के हो जाएँगे। यह तो अनादिकाल का अभ्यास है, लेकिन यह ज्ञान ऐसा है कि इससे *नोंध* बिल्कुल भी नहीं रहती। ये *नोंध* रखने से तो सारी परेशानियाँ है!

प्रश्नकर्ता : *नोंध* का ही अभ्यास किया है, ऐसा है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह अभ्यास छोड़ना ही पड़ेगा न! अभी तक तो 'आप' 'चंदूभाई' थे, लेकिन अब 'शुद्धात्मा' बन गए। तो फिर अगर वह बदल गया है तो यह भी बदलेगा न? *नोंध* तो छोड़नी ही पड़ेगी न? *नोंध* कब तक चलेगी? हमें किसी भी प्रकार की *नोंध* नहीं रहती। इतने सब लोगों में, कोई कुछ भी कहे, लेकिन हमें *नोंध* है ही नहीं। *नोंध* पहले से ही नहीं थी, इसे संसार के लोग क्या कहते हैं? पूर्वग्रह कहते हैं। *नोंध* को तो 'प्रेज्युडिस' कहो या कुछ भी कहो, लेकिन यह *नोंध* नुकसानदायक है, *नोंध* ही तंत है। थोड़ा सा भी दु:ख क्यों रहना चाहिए? यह जो दु:ख कुछ भी है तो इसी का है, *नोंध* की वजह से ही रहता है। सुख के समुद्र में रहकर भी फिर दु:ख क्यों रहना चाहिए? सुख का समुद्र नहीं है क्या यह 'ज्ञान'?

प्रश्नकर्ता : है दादा, है।

दादाश्री : फिर भी *नोंध* रखते हो न?

प्रश्नकर्ता : हो जाती है, दादा।

दादाश्री : अब मत रखना, और रख ली जाए तो वापस मिटा देना। वर्ना तंत का मतलब है हठ करना। आग्रह, दुराग्रह। मुझे भी कहनेवाले कह जाते हैं या नहीं कह जाते?

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब किसके प्रति तंत रखने हैं?

दादाश्री : हाँ, तंत रखने से कुछ हुआ नहीं। सिर्फ पोथियाँ भरती हैं उतना ही, लेकिन और कुछ हो नहीं पाता।

बदलते कर्मों की *नोंध* कैसी?

यानी कल अपना किसीने अपमान किया हो और उस व्यक्ति को आज देखें तो वह नया ही लगना चाहिए और वह नया ही होता है। लेकिन अगर ऐसा नहीं दिखता तो उसमें आपसे भूल ही हो रही है। आप दूसरे ही रूप में देखते हो। लेकिन वह नया ही होता है। एक कर्म पूरा हो गया, इसलिए अब वह दूसरे ही कर्म में होता है। वह दूसरे कर्म में होता है या उसी के उसी कर्म में होता है?

प्रश्नकर्ता : दूसरे कर्म में होता है।

दादाश्री : और आप उसी कर्म में रहते हो, तो कितना गंदवाड़ा कहलाएगा?! आपसे कभी होती है क्या ऐसी भूल? *नोंध* रखते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : पहले तो *नोंध* लेने की आदत थी, अब नहीं लेते।

दादाश्री : नहीं लेते न? बेकार ही पोथियाँ बिगाड़ने के लिए लोग नोंधबही रखते हैं।

मुझे एक व्यक्ति ने कहा कि 'आप प्रकृति के नचाए नाचते हो। आप लट्टू हो।' लेकिन तब भी हमने *नोंध* नहीं रखी। उसके बाद मैंने उसे डाँटा। मैंने कहा, 'अरे, ऐसा तो कहा जाता होगा? यह कैसा आदमी है तू?' हम उसके मुँह पर ज़रूर कह देते हैं, लेकिन फिर *नोंध* नहीं रखते। *नोंध* रखना तो भयंकर गुनाह है।

यानी किसी की दाद नहीं, फ़रियाद नहीं। कुछ भी नहीं। कोई अपमान कर गया हो तो आपको मुझे दाद-फ़रियाद नहीं करनी है। दाद-फ़रियाद बेकार गई। जो हुआ वही ठीक है, न्याय ही है न? प्रश्न ही खड़ा नहीं होता न? ऐसा है यह विज्ञान, साफ!

नोंध तो नहीं छूटती अंत समय में भी

एक अस्सी साल के चाचा थे, उन्हें अस्पताल में भरती किया था। मैं जानता था कि ये दो-चार दिन में जानेवाले हैं यहाँ से, फिर भी मुझसे कहने लगे कि, 'वे मगनभाई तो मुझसे यहाँ मिलने भी नहीं आए।' हमने बताया कि, 'मगनभाई तो आ गए।' तो कहने लगे कि, 'उस नगीनदास का क्या?' यानी कि बिस्तर में पड़े-पड़े *नोंध* करते रहते थे कि कौन-कौन मिलने आया। अरे, अपने शरीर का ध्यान रख न, अब दो-चार दिनों में तो जाना है। पहले तू अपनी गठरियाँ संभाल, तेरी यहाँ से ले जाने की गठरियाँ तो जमा कर। ये नगीनदास नहीं आए तो उसका क्या करना है? लेकिन फिर वे चाचा ऐसी *नोंध* करते रहते हैं कि, 'मुझसे कौन-कौन मिलने आया?' अरे, तुझसे मिलने आए उससे तुझे क्या फायदा? वे मिलने के बाद वापस बाहर जाकर क्या कहेंगे? कि, 'अब ये चाचा तो चले, अब दो दिन के मेहमान हैं!' ये लोग कैसे आशीर्वाद देकर जाते हैं कि 'ये अब गए'! यानी कि मिलने आनेवाले ऐसा कहते हैं। ये तुझसे मिलने आए उससे क्या फायदा हुआ? इसके बजाय नहीं आएँ तो अच्छा है न, ताकि ऐसे आशीर्वाद तो नहीं दें? मिलने आनेवाले बाहर जाकर क्या कहते हैं कि, 'अब, दीये में तेल खत्म हो गया है और अब तो बाती ही जल रही है।' जबकि चाचा क्या कहते हैं कि, 'वे मगनभाई मिलने नहीं आए!' अब यह ममता छूट जाए तो हल आ जाए। अरे, जाने का वक्त आ गया, बोरी-बिस्तर बाँध! क्या तुझे साथ ले जाने के लिए राहखर्च नहीं चाहिए? लेकिन यदि इतनी समझ होती तो, ऐसा बवाल करता ही नहीं न! लेकिन समझ नहीं है इसलिए बार-बार इस जंजाल में ही फँसता रहता है। जगत् की वासना कितनी है!

लोग तो, जब इन्सान बीमार होता है तब लोग उसके हालचाल पूछने आते हैं। अब एक तरफ शरीर में दर्द की वेदना रहती है और दूसरी तरफ लोग उससे जवाब माँगते हैं, उससे परेशानी होती है! कुछ लोगों को तो तभी संतोष होता है, जब सभी हालचाल पूछने आएँ। हमें तो ऐसा रहता है कि किसी को भी तकलीफ नहीं पड़े इसलिए किसी को पता ही नहीं चलने देते। जबकि लोग तो मृत्यु शैया पर पड़े हों, फिर भी ऐसी *नोंध* रखते हैं कि वे नगीनभाई मुझसे मिलने नहीं आए। क्योंकि अहंकार है न! जगत् व्यवहार है न! वह तो जैसा रास आए वैसा बोलता है। उसके आत्मा को देखने में ही फायदा है। बाकी का सारा पागलपन देखने जैसा नहीं है। पागलपन क्या कहेगा, वह कहा नहीं जा सकता।

जागरूक रहो, पुरानी आदतों के सामने

प्रश्नकर्ता : हमारे साहब हैं न, वे किसी के साथ बातचीत नहीं करें, तो फिर उन साहब की निंदा शुरू हो जाती है कि साहब ऐसे हैं, वैसे हैं।

दादाश्री : फिर?

प्रश्नकर्ता : साहब के विरूद्ध बातचीत किस हिसाब की वजह से होती है? साहब की निंदा क्यों होती है? वह किन आधार पर होती है?

दादाश्री : ओहो! वह साहब करता होगा न? या तू करता है?

प्रश्नकर्ता : मैं करता हूँ।

दादाश्री : ओहो, बहुत बड़ा है न!

प्रश्नकर्ता : अन्य किसी व्यक्ति के साथ जब बातचीत होती है, तब साहब की बात आ जाए तो उस वक्त कुछ निम्न बातें बोल देते हैं। साहब के लिए ज़रा हल्का बोल देते हैं।

दादाश्री : हाँ, यानी कि बैर रखते हो।

प्रश्नकर्ता : ऐसा ही होता है।

दादाश्री : क्यों होता है? साहब ने ऐसा कुछ कह दिया हो तो उसकी *नोंध* रखते हो, इसलिए। *नोंध* नहीं रखनी चाहिए। हम बोलते हैं उस समय हम समझते हैं न कि व्यवस्थित है, अत: खत्म हो गया। क्या तू *नोंध* रखता है?

प्रश्नकर्ता : *नोंध* रह जाती है।

दादाश्री : बनिए का बेटा। ओहोहो! तुम लोग झाँसे में नहीं आते न? *नोंध* रखे बगैर रहते नहीं। तुझे समझ में आता है कि क्या भूल हो रही है?

प्रश्नकर्ता : *नोंध* रखते हैं, तब एक प्रकार का बैर रहता है? क्या बैर पेन्डिंग रहता है?

दादाश्री : नहीं, वहाँ पर वह ज्ञान का उपयोग नहीं कर रहा है। भले ही, कैसा भी खराब बोले, 'तुझे निकाल दूँगा और ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा, तुझे डिसमिस कर दूँगा।' हमें उस समय कहना है, 'इन्होंने जो बोला वह व्यवस्थित है।' ऐसा कहते ही फिर प्रश्न उठने बंद हो जाएँगे। व्यवस्थित नहीं कहते इसलिए मन में प्रश्न खड़े होते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा होने के बाद दु:ख होता है कि यह बहुत गलत हुआ।

दादाश्री : हाँ, लेकिन बैर रखने की आदत है यह।

प्रश्नकर्ता : इस आदत को खत्म कर देना है।

दादाश्री : नहीं लेकिन जहाँ पर हम जानते हैं कि 'यहाँ पर फँस जाते हैं,' वहाँ पर अधिक जागृत रहना है। कहाँ ठोकर खा जाता है, वह देखना है हमें।

मोक्ष में जाना है या फिर ढीला छोड़ दिया है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, मोक्ष में जाना है। यह पसंद नहीं है, पुरानी आदतें सामने आ जाती हैं। इसलिए मैंने यह प्रोब्लम आपके समक्ष रखी।

दादाश्री : प्रोब्लम तो है ही। हमारा ज्ञान ही इतना अच्छा है। जहाँ पुरानी आदतें पड़ी हों, वहाँ पर धोखा ही खाएगा न बेचारा! आदत ही नहीं पड़ी होती तो?

निर्बलता को छुपाने के लिए बातें करे भूतकाल की

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में जिसके पास कुछ नहीं हो, वह भूतकाल की जुगाली करता है। हमारे यहाँ तो ऐसा था, हमारे बाप-दादा के वहाँ ऐसा था, वैसा था, और अभी पिछला याद करके आनंदित होता है। क्या उसे *नोंध* लेना कहेंगे?

दादाश्री : वह तो वर्तामान काल की निर्बलता को छुपाने के लिए भूतकाल की बातें निकालते हैं सब। सबसे कहता फिरता है कि हमारे बाप तो छत्रपति शिवाजी परिवार के थे। ऐसे और ऐसी सब बातें करता है सारी। हम तो राणा प्रताप के वंश के हैं, ऐसी सब बातें अपने आप ही कहता रहता है। राणा तो गए, अब तू कैसा राणा है? वह बता न! लेकिन वैसे तो ऐसा व्यक्ति हो न उसे हम समझ सकते हैं कि यह निर्बल व्यक्ति है। खुद की लाइट ही नहीं है, पराये दादा की लाइट चढ़ाकर घुम रहा है, वह किस काम का? खुद की लाइट होनी चाहिए न? लेकिन लोग तो उसके आधार पर ही जी रहे हैं। वर्ना वे जीएँ किस आधार पर? जीने का कोई साधन नहीं रहा, इसलिए वह इस आधार पर जी रहा है। हम उससे यों छुड़वा नहीं सकते, लेकिन हम उसका ऐसा नहीं कर सकते, हमें उसकी *नोंध* नहीं लेनी है। ऐसे तो सभी तरह के लोग होते हैं!

हमें तो भूतकाल के ज्ञाता-दृष्टा रहना है। यानी भूतकाल की कोई स्मृति आई हो, तो उसके

ज्ञाता-दृष्टा रहो कि, 'भाई, यह ऐसा कह रहा है, वैसा कह रहा है।' अब यह है अर्थ हिन का, उस पर कुछ हस्ताक्षर करने जैसा नहीं है। देखने जैसा है और जानने जैसा है कि वह क्या कह रहा है और क्या नहीं? उसी पर से तो हमें पता चलेगा कि किस पर राग था और किस पर द्वेष था।

आश्रित को कभी मारना नहीं चाहिए

प्रश्नकर्ता : दादा, मेरा मिजाज़ हट जाता है, तब कितनी ही बार मेरा हाथ पत्नी पर उठ जाता है।

दादाश्री : स्त्री को कभी मारना नहीं चाहिए। जब तक आपका शरीर मज़बूत होगा, तब तक चुप रहेगी, फिर वह आप पर चढ़ बैठेगी। स्त्री को और मन को मारना वह तो संसार में भटकने के दो साधन है। इन दोनों को मारना नहीं चाहिए। उन्हें तो समझाकर काम लेना पड़ता है।

हमारा एक मित्र था। उसे मैं जब देखूँ तब पत्नी को एक तमाचा लगा देता था, उसकी ज़रा-सी भूल दिखे तो मार देता था। फिर मैं उसे अकेले में समझाता कि ये तमाचा तूने उसे मारा लेकिन उसकी वह *नोंध* रखेगी। तू *नोंध* नहीं रखता लेकिन वह तो *नोंध* रखेगी ही। अरे, यह तेरे छोटे-छोटे बच्चे, तू तमाचा मारता है तब तुझे टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं, वे भी *नोंध* रखेंगे। और वे वापस, माँ और बच्चे इकट्ठे मिलकर इसका बदला लेंगे। इसलिए स्त्री को मारने जैसा नहीं है। मारने से तो उल्टे तुम्हें ही नुकसानदायक, अंतरायरूप हो जाते हैं।

आश्रित किसे कहा जाता है? खूंटे से बंधी गाय होती है, उसे मारोगे तो वह कहाँ जाएगी? घर के लोग खूंटे से बाँधे हुए जैसे हैं, उन्हें मारोगे तो आप टुच्चे कहलाओगे। उन्हें छोड़ दे और फिर मार, तो वे तुझे मारेंगे या फिर भाग जाएँगे। बाँधे हुए को मारना, वह शूरवीर का मार्ग कैसे कहलाएगा? वह तो निर्बल का काम कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मन में इच्छा नहीं हो फिर भी हाथ उठ जाता है, ऐसा प्रतिभाव आ जाता है।

दादाश्री : आता है, आता है न! इसमें ऐसा हो सकता है, नहीं होगा ऐसा नहीं है। कई लोग तो पत्नी को संडासी से फटकारते हैं। संडासी लेकर, फटकार कर व्यवहार करते हैं! इज्ज़तदार लोग हैं न! खानदानी, छः गाँव के पटेल! ऐसा करने से खानदानीपना चला जाता है, इज्जत की नीलामी हो जाती है। पत्नी को संडासी से मारा तो क्या इज्जत नीलाम हो गई, ऐसा नहीं कहा जाएगा?

शब्दों के घाव नहीं भरते, कलेजे में अंकित हो जाते हैं

कई स्त्रियों से मैं पूछता हूँ कि हज़बेन्ड कैसा है? तब मुझे बताती हैं कि सीधे-सरल नहीं हैं। तब मैंने कहा, 'क्या यह ज्ञान लेने के बाद भी नहीं सुधरे?' तब कहती हैं, 'थोड़ा सुधरे होंगे लेकिन उन्होंने मुझे पहले जो घाव दिए हैं न, वचन से, वाणी से, वे मेरे कलेजे में अंकित हैं, अभी भी! अरे, हृदय में अंकित हो गए हैं! अरे, अब तो निकाल दो, उनके सुधरने के बाद तो। ये वाणी से दिए गए घाव तो हृदय में अंकित हो जाते हैं। कलेजे के टुकड़े-टुकड़े कर दे ऐसे होते हैं। शरीर पर लगे घाव तो दवाई से भर जाते हैं, भर जाते हैं न या नहीं भरते? भरते हैं, लेकिन ये घाव नहीं भरते! क्योंकि पत्थर मारे तो छूता है लेकिन शब्दों नहीं छूते हैं। वह तो यदि अपनी इच्छा हो तभी अंदर ऐसे हृदय में चोट लगती है। अपनी इच्छा हो तभी यह कलेजे पर घाव लगता है। वह पचास, पचास सालों तक अंदर पड़ा रहता है। कई स्त्रियों से पूछता हूँ, तो बताती हैं कि 'अभी भी मेरा यह घाव भरा नहीं है, पचास साल पहले जो शब्द कहे थे, वे अभी तक भी नहीं भरा। कलेज पर घाव लगे हैं, वे अब शब्दों के घाव की तरह निकलते हैं। इसलिए शब्दों से घाव

मत लगाना और अगर कोई दे तो, शब्द थोड़े ही कोई खून निकालते हैं? खून निकालते हैं क्या? बोल क्यों नहीं रहे हो? और फिर वे शब्द भी फिर वह बेचारा नहीं बोल रहा है। रिकॉर्ड बोल रही है।

दिए हुए ज़ख्मों को तोलकर लेना

फिर वह क्या करती है, जानते हो? वह सुन लेती है न? आपके डर की वजह से सामने जवाब नहीं देती है लेकिन वक्त आने पर वापस कर देती है। हम कहें कि 'यह क्या देने लगी हो?' तब कहेगी कि 'मेरे कलेजे पर जो लिखा था वही दे रही हूँ।' जबकि पुरुष कलेजे पर नहीं लिखते। स्त्री को आप जितना कुछ भी कहते हो हमेशा उसकी जवाबदेही आती है। यदि आप उसकी एक भी भूल निकालोगे तो वह हमेशा उसकी *नोंध* रखती है और ये भोले लोग कुछ भी *नोंध* में नहीं रखते, भूल जाते हैं, बेचारे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अब समझ आया।

दादाश्री : वह *नोंध* कर लेती है। *नोंध* करती है कि, 'उस दिन थोड़ा नमक कम डला था, तो रौब मार रहे थे लेकिन जब वक्त आएगा तब कहूँगी,' ऐसा कहती है। फिर किसी दिन मंदिर से कोई हमारी चप्पल ले जाए और घर वापस लौटकर कहें कि आज तो मेरी चप्पल चोरी हो गई। तब कहेगी आप उस दिन नमक के बारे में कह रहे थे न लेकिन आप में भी कहाँ बरकत है?' उस दिन की बात अभी याद आई। उसका रिएक्शन अभी आया! अपने रिएक्शन तो तुरंत ही होते हैं, जबकि उनके रिएक्शन तो! बीस साल बाद भी रिएक्शन आ सकते हैं। उन्हीं शब्दों में। मैंने देखा है, अनुभव किया है। हमने कोई शब्द बोल दिया हो न तो बीस साल बाद भी, उसका रिएक्शन देती हैं, वे। तब कहाँ छिपाकर रखा था, कौन सी गुफा में रख छोड़ा था। शब्द, वही का वही शब्द!

स्त्री देखती है कि अब शरीर शिथिल हो गया है। शरीर ढ़ीला, मतलब समझे क्या आप?

प्रश्नकर्ता : बूढ़े हो जाते हैं, तब।

दादाश्री : जब बीमार पड़ जाएँ और शरीर शिथिल हो जाए, तब हम कहें कि 'सरदी-जुकाम हो गया है, थोड़ी सी सोंठ घिस दो न? बेंअक़ल, आप में तो बरकत ही नहीं है' ऐसा सुनना पड़ेगा बाद में। जबकि यदि पहले से ही अच्छी तरह रखा होता तो आज यह सुनना नहीं पड़ता। शरीर तो शिथिल हो जाएगा या नहीं हो जाएगा? समझ में आया न भाई?

नोंध से बंधे बैर, इसलिए सावधान

बार बार दुःख देने पर वह मन में नक्की करती है कि 'वक्त आने पर मैं भी उसे दुःख दूँगी।' झगड़े बढ़ जाते हैं। बैर रखना ही नहीं चाहिए। वह यदि दो, चार बार मार जाए तो भी हमें हार जाना चाहिए। हारने के बाद भी जीत का समय है लेकिन जीतकर कोई फायदा नहीं है। ऐसे घर में किससे जीतना है? बाहर जीतकर आओ न। घर में तो खुद अपने ही लोग हैं। रोज़ साथ में रहना है। साथ में रहना होता है या नहीं?

स्त्रियाँ तो, अगर मान भंग हो जाए तो पूरी ज़िंदगी उसे नहीं भूल पाती है। ठेठ अरथी उठने तक वह गुस्सा साबुत रहता है! अगर वह गुस्सा भूल जाए, तो यह सारा संसार कभी का ही पूरा हो गया होता। नहीं भूलती हैं, इसलिए सावधान रहना। सावधान रहकर सब काम करने जैसा है। इसमें मज़ा ही क्या है? मज़े में रहना ढूँढ निकालो कि किस तरह हम सुख, शांति से रहें और मोक्ष में जाएँ। वर्ना अगर थोड़ा सा भी बैर बंधा हुआ होगा तो कहेगी, 'आप मोक्ष में कैसे जाओगे, मैं देखती हूँ!' आप पर गोली चलाएगी ही। भगवान के पीछे भी पड़े थे। पार्श्वनाथ भगवान के पीछे कमठ पड़े थे, दस जन्मों

तक। दम निकाल दिया। लेकिन भगवान थे, पार्श्वनाथ थे इसलिए चल गया।

नोबिलिटी से करे निकाल

इसलिए यदि पत्नी डाँटे तो मन में उसकी *नोंध* नहीं करनी चाहिए। कुछ हो भी जाए तो हमें उसे गुप्त भाव रखकर मन में समा लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब हम पत्नी को डाँटते हैं, तब वह उसे ध्यान में रखती है और पूरी *नोंध* रखती है, उसका क्या?

दादाश्री : क्योंकि अपनी कमज़ोरी है न! हमने डाँटा था, उसका फल हमें चखना पड़ा। फिर मैंने कहा, 'यह बंद कर दो, अपना काम नहीं है। फिर यदि वह करे तो करने देता था। क्योंकि उन्हें खुद निकालना नहीं आता, तो उसमें मैं क्या करूँ! लेकिन फिर मैं तो उसमें फँसता नहीं था। मतभेद तक भी नहीं होने देता था।

हम, क्यों उसके साथ ऐसा करें कि उसे दु:ख हो? और यदि वह हमें दु:ख दे तो हमें उसे जमा कर लेना चाहिए। लेकिन हमें उसे दु:ख नहीं देना चाहिए। अपने में नोबिलिटी का गुण होना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है दादा, कबूल है। यह अब हमें समझ में आ गया ठीक से। एडजस्ट हो गया।

दादाश्री : बगैर बात के, वर्ना अगर हम वैसा करने जाएँ तो उससे तो कढ़ी बिगड़ जाएगी। क्योंकि उनका दिमाग ठिकाने पर नहीं रहे तो दाल में नमक वगैरह ज़्यादा डला जाएगा तो काम बिगड़ जाएगा न! उसके बजाय तो कहना कि 'नहीं बहुत अच्छी है, आपकी बात तो मुझे बहुत पसंद आई।' भले ही पसंद नहीं आई हो लेकिन मुँह पर कहने में क्या हर्ज है कि 'आपकी बात मुझे बहुत अच्छी लगी।'

लाओ निबेड़ा अब ऐसे

मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह समझ में आया क्या आपको? नासमझ बनकर छूट जाना। पत्नी भी ऐसा कहेगी कि आप घनचक्कर हो। तब कहना हाँ, वास्तव में, मेरा दिमाग खिसक ही गया है, वर्ना क्या मुझे ऐसा बोलना चाहिए? तब वह कहेगी कोई बात नहीं, लेकिन, पत्नी के साथ ज़्यादा झंझट मत करना। वह पलटा देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो दादा यही मुख्य बात है न! पलटने की कला की ये जो कला है, वह आप से ही सीखने को मिलती है।

दादाश्री : वह तो हम आपको सिखाते हैं लेकिन 'मैं घनचक्कर हूँ,' ऐसे बोलना आना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसे बोलना आ गया है, लेकिन बात को पलटना नहीं आया है, ऐसा हुआ है।

दादाश्री : मैं तो हीरा बा को भी खुश कर देता हूँ ऐसा बोलकर। 'हाँ! आप तो बहुत अच्छे हो, ऐसा क्यों कह रहे हो?' पलट लेना है। अपनी नीयत गलत नहीं है। पलटने के पीछे, यदि हमें उनसे कोई संसारी चीज़ ले लेनी हो, तब वह गलत है। हमें तो उनके मन को स्वच्छ करने के लिए पलटना है। हमने जो पत्थर डाले हैं, पत्थर तो बैर बाँधेंगे, भाई!

भले ही कैसा भी ढीला इंसान हो, आपके पास उसकी चलती नहीं हो, फिर भी यदि उसके मन पर पत्थर लगे हों न तो बैर बाँधेगा। इसलिए वहाँ पर भी उल्टा-सीधा करके मन साफ कर देना। 'पहले से ही ऐसा था मैं और घनचक्कर भी हूँ।' तब वह कहेगा, 'अच्छा आदमी है लेकिन यह हो गया।' फिर तुरंत आपका नाम किताब में से फाड़ देगा। *नोंध* फाड़ देगा वह। आपको बोलना नहीं आता कि 'यह चक्कर है' ऐसा है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

सुधारें उसे, संस्कार से सींचकर

दादाश्री : किसी भी स्त्री को परेशान मत करना। यदि स्त्री, पुरुष को परेशान कर दे तो निबाह लेना। आप बड़े मन के हो। उसे परेशान नहीं करना चाहिए। और यदि परेशान करोगे तो वह मन में *नोंध* रखेगी, और आप *नोंध* नहीं रखते। आप भोले दिल के हो। राजसी मन के हो। वह तो संकुचित मन की होती है, वह *नोंध* रखती है कि आज मज़बूत है न, इसलिए रौब जमा रहा है, लेकिन जब बूढ़ापा आएगा न तब देखूँगी। वह ताक में रहती है। इसलिए सँभालकर चलना। जबकि आप उन्हें लपेटे में नहीं लोगे क्योंकि आप राजसी मन के हो, पुरुष हो। जबकि वह तो बैर वसूल करेगी। लेकिन सभी स्त्रियाँ ऐसी नहीं होतीं, कोई-कोई अच्छी भी होती हैं। आपको यदि सुधारना आए तो देवी बन सके ऐसी होती है। संस्कार द्वारा सुधारो तो देवी बन सके, ऐसा है।

ये तो, पति के साथ मतभेद हो जाए, तो भी निभा लेती है और मरने के बाद में फिर उसका क्रिया कर्म भी करती है। तब हम कहें कि 'चाची उस दिन तो चाचा ने आपको मारा था और आपको गिरा दिया था।' तब कहेगी 'भाई, लेकिन ऐसा पति नहीं मिलेगा।' ऐसी-ऐसी *नोंध*वाली हैं, ये सब। ये तो संस्कार हैं, आर्य संस्कार कहलाते हैं।

इसलिए हमें अपना अहंकार थोड़ा कम कर देना चाहिए। पत्नी के साथ बहुत अच्छी तरीके से रहना चाहिए। स्त्री के बारे में बहुत समझने जैसा है। स्त्री का अपमान नहीं होना चाहिए। उसके साथ ऐसा करते हो? बाहर पुलिसवाले द्वारा किया गया अपमान सहन करते हो और यहाँ पर? तब लोग मुझे क्या कहते हैं कि 'ऐसा बोलोगे तो चढ़ बैठेगी। अरे भाई! नहीं चढ़ेगी, चाहे कितना भी पानी छिड़कें तो भी क्या मूँछें आएँगी उसे? अरे, कैसे चढ़ बैठेगी वह? कैसे आदमी हो? कैसे चढ़ बैठेगी? वह तो जब किच-किच-किच करें तो समझ जाती है कि इनमें कुछ बरकत नहीं है। और *'भाभो भारमां तो बहू लाजमां'* वह कई बार जब गलत करती है, तब मन में खूब पछताती है कि ये कुछ कह नहीं रहे हैं, मुझ से यह गलती हो गई है। इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए। स्त्री को ज़रा भी दु:ख नहीं देना चाहिए, बच्चों पर भी क्रोध नहीं करना चाहिए।

घर के लोगों को तो ज़रा सा भी दु:ख नहीं देना चाहिए। जिनमें समझ नहीं होती, वही घर के लोगों को दु:ख देता है।

प्रकृति को पहचानकर, सतर्क रहना

पुरुष अवसरों को भूला देते हैं और स्त्रियाँ *नोंध* पूरी ज़िंदगीभर रखती हैं। पुरुष भोले होते हैं। विशाल मन के होते हैं। भद्र होते हैं। वे सब भूल जाते हैं, बेचारे। जबकि स्त्रियाँ तो ऐसा सुना भी देती हैं कि 'उस दिन आपने मुझे ऐसा कहा था, जो मेरे दिल पर लग गया था।' अरे, बीस साल हो गए, अभी भी *नोंध* ताज़ा है! लड़का बीस साल का हो गया, शादी लायक हो गया, तब भी क्या उस बात को अंदर नोट कर रखा है? सब चीज़ें सड़ जाती हैं लेकिन इनकी चीज़ नहीं सड़ती! स्त्री को हमने दिया हो तो वह उसे असली जगह पर रख देती है, अर्थात् दिल के अंदर, इसलिए ऐसा व्यवहार मत करना। यह देने जैसी चीज़ नहीं है। चेतकर चलने जैसा है।

इसलिए शास्त्रों में भी लिखा है कि, *'रमा* (स्त्री) *रमाड़वी सहेली छे, विफरी महामुश्केल छे'* बिफरे तो वह क्या-क्या कल्पना नहीं करेगी, वह कहा नहीं जा सकता। इसलिए स्त्री को बार-बार नीचा नहीं दिखाना चाहिए। सब्ज़ी ठंडी क्यों हो गई? दाल में बघार ठीक से नहीं किया, ऐसी किच-

किच किसलिए करता है? बारह महीने में एकाध दिन एकाध शब्द हो तो ठीक है, यह तो रोज़! *'भाभो भारमां तो वहु लाजमां'* (ससुर गरिमा में तो बहू लाज में), आपको गरिमा में रहना चाहिए। दाल अच्छी नहीं बनी हो, सब्ज़ी ठंडी हो गई हो, तो वह नियम के अधीन होता है। और बहुत हो जाए तब धीमे रहकर बात करनी हो तो करना किसी समय, कि यह सब्ज़ी रोज़ गरम होती है, तब बहुत अच्छी लगती है। ऐसे बात करोगे तो वह उतने में समझ जाएगी।

यह तो, फिर वाइफ को दबाकर रखता है कि 'यदि तू ऐसा नहीं करेगी तो नहीं चलेगा।' ओहोहो, आया बड़ा पति! इसलिए फिर वह *नोंध* करती है कि ज़रा टाइट है, इसलिए मुझे डरा रहा है लेकिन जब थोड़ा नरम हो जाएगा, तब मैं डराऊँगी। अतः हमेशा जो भी किया हो, उसका फल मिलेगा न? यदि हम उल्टा करेंगे तो फल मिलेगा न? गलत करें ही नहीं तो!

जहाँ प्रेम वहाँ पर *नोंध* नहीं

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नि में भी ऐसा ही होता है न? 'मैं तुझे चाहता हूँ, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ' कहते हैं। लेकिन फिर वापस झगड़ते हैं।

दादाश्री : इसी को आसक्ति कहते हैं! ठोर नहीं और ठिकाना नहीं, बड़े आए चाहनेवाले! सचमुच में चाहनेवाला तो मरते दम तक हाथ नहीं छोड़ता। बाकी का कुछ भी हो, उसकी *नोंध* नहीं लेता। जहाँ प्रेम है वहाँ *नोंध* होती ही नहीं। *नोंध*बही रखो और प्रेम रखो, दोनों साथ में नहीं हो सकते। अगर *नोंध*बही रखें कि 'ऐसा किया और वैसा किया' तो वहाँ पर प्रेम नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : जहाँ प्रेम हैं, वहाँ *नोंध* नहीं होती है, यह बहुत बड़ी बात निकली।

दादाश्री : हाँ, जिस प्रेम में *नोंध* हों वहाँ प्रेम नहीं है! इस जगत् का प्रेम तो *नोंध*वाला हैं। 'आज मुझे ऐसा कह गया।' ऐसा कहे। तो फिर वह कैसा प्रेम? यदि प्रेम है तो *नोंध* नहीं चाहिए। नहीं तो आसक्ति हो जाएगी। जो प्रेम कम-ज़्यादा होता है उसे आसक्ति कहते हैं। तो यह जगत् तो *नोंध* रखे बिना रहता ही नहीं न! भले मुँह पर नहीं दिखे, लेकिन मन में कहेंगे, 'मुझे परसों कह गए थे।' ऐसा उसके मन में रखते हैं न? इसलिए *नोंध* तो है न उसके पास? जिसके पास *नोंध* नहीं है, उनका प्रेम सच्चा! हमारे पास नोंधबही है ही नहीं, फिर खाता ही कहाँ से होगा?! नोंधबही होगी तो खाता होगा। अब आप नोंधबही फेंक देना। नोंधबही रखने जैसा नहीं है!

प्रश्नकर्ता : *नोंध* रखे कि 'तूने मुझे ऐसा कहा, तूने ऐसा कहा।' उससे फिर वापस प्रेम टूट जाएगा।

दादाश्री : हाँ, लेकिन *नोंध* रखे बगैर नहीं रहता। पत्नी भी रखती है न? तेरी पत्नी नहीं रखती होगी?

नोंध नहीं लेते ज्ञानी कभी

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो सभी रखते हैं, लेकिन प्रतिक्रमण करके ज्ञान द्वारा इस *नोंध* को मिटाया जा सकता है न?

दादाश्री : वह तो कैसे भी पौंछने जाओगे न, तब भी कुछ होगा नहीं। अगर *नोंध* रखी तो वह पौंछने से कुछ नहीं होता। *नोंध* ढीली हो जाती है, लेकिन वह बोले बगैर रहती नहीं न? ये भाई चाहे कुछ भी करें या फिर आप में कितना भी बदलाव आ जाए, फिर भी हम उसकी *नोंध* नहीं रखते। हमारी ऐसी दखलंदाज़ी ही नहीं है न किसी भी तरह की! तूने देखा है, 'दादा' को कभी तेरे बारे में *नोंध* रही है, ऐसा?

प्रश्नकर्ता : कभी भी नहीं।

दादाश्री : हाँ, किसी की भी *नोंध* नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : इसीलिए वह शुद्ध प्रेम कहलाता है?

दादाश्री : हाँ, वह शुद्ध प्रेम कहलाता है। इसलिए तू मुझे कभी भी अप्रिय लगता ही नहीं है, तू मुझे प्रिय ही लगता रहता है। तूने परसों कुछ उल्टा किया हो, उससे मुझे कुछ लेना-देना नहीं है। मैं *नोंध* रखूँ तब झंझट रहेगी न? मैं जानता हूँ कि तुझ में से तो कमज़ोरी गई नहीं है, इसलिए उल्टा होगा ही न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे तो *नोंध* रखने की बहुत आदत है।

दादाश्री : वह आदत अब कम ही होती जाएगी। यह बात सुनी इसलिए अब तुझे नुकसान समझ में आ गया न? अब फिर *नोंध* कम होती जाएगी।

तुझे प्रतीति बैठी कि तू जो *नोंध* रखता है, वह गलत है। अब तुझे वह अनुभव में आता जाएगा कि *नोंध* नहीं रखी, उससे मुझे फायदा हुआ। *नोंध* नहीं रखी, तो फिर धीरे-धीरे उसे स्वाद आता ही जाएगा कि वास्तव में यह लाभदायक ही है। फिर आचारण में आएगा। यह है इसका तरीक़ा!

यानी पहले आचारण में से छूटना हो तो आचारण छूटने से पहले प्रतीति बैठती है। फिर वापस उसे अनुभव होता जाता है। उसके बाद वह आचारण छूट जाता है। यानी उसके 'साइन्टिफिक रिज़ल्ट' से आएगा न?! सीढ़ी चढ़नी हो तो क्या एकदम से चढ़ा जा सकता है? वह तो सीढ़ी दर सीढ़ी से ही चढ़ा जाता है न! क्या एकदम से सब सीढ़ियाँ चढ़ी जा सकती हैं।

तुझे समझ में आया न? तू जब से इसे समझने लगेगा तब से फिर *नोंध* रखना कम होता जाएगा।

तू तो पत्नी की भी *नोंध* रखता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जो खुद की पत्नी है, तूने उस पर भी *नोंध* रखी? और वह भी *नोंध* रखती है। तू इतना बोल गया होगा न, तो वह कहेगी 'मेरी बारी आने दो!' वह सच्चा प्रेम नहीं है, आसक्ति कहलाती है। सच्चा प्रेम कभी उतर नहीं जाता। हमारा प्रेम बिल्कुल सच्चा होता है। हम *नोंध* ही नहीं रखते न!

प्रश्नकर्ता : आपकी कृपा हो जाए तो ऐसा हो जाएगा जल्दी।

दादाश्री : हमारी कृपा तो है ही। लेकिन तुझे खुद को नहीं निकालना, तो क्या हो सकता है? 'पत्नी ने ऐसा किया, वैसा किया' करता है। तो क्या तू ऐसा नहीं करता कि तू पत्नी का नाम दे रहा है? तू *नोंध* रखेगा तो वह *नोंध* रखेगी। मैं *नोंध* रखने का बंद कर देता हूँ तो कोई मेरी *नोंध* नहीं रखता है। किसी को डाँटू करूँ तो भी कोई *नोंध* नहीं रखता। उसका कारण यह है, कि मेरी *नोंध* बंद है। तो फिर आप लोगों को *नोंध* रखने से क्या काम है?! लेकिन तू तो तेरी पत्नी की *नोंध* रखता है इसलिए फिर तेरी पत्नी तुझे छोड़ देगी क्या? वह तो अच्छा हुआ कि इसने शादी नहीं की, नहीं तो यह भी फिर पत्नी की *नोंध* रखता न! हम कभी भी किसी की *नोंध* रखते ही नहीं न! और दूसरा, हम किसी की बात नहीं करते।

मोक्ष में जाना और *नोंध* रखना, दोनों साथ में नहीं हो सकता न। अब बनिए *नोंध* रखे बगैर रहते हैं क्या? कोई *नोंध* रखे बगैर नहीं रहे और मोक्ष में जाना हो तो *नोंध* को छोड़ देना पड़े। *नोंध* की बुक को निकाल देनी पड़ेगी। हमारी तरह भोले रहना। दुकान में वह *नोंध* लिख गई तो लिख गई। नहीं लिखी गई तो भी कोई बात नहीं। वह दुकान ही नहीं चाहिए।

नोंध से उपजे, बैर लेने की वृत्ति

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि *नोंध* नहीं रखें तो वह चली जाएगी न, दादा?

दादाश्री : *नोंध* नहीं रखनी चाहिए। *नोंध* रखकर, क्या फायदा मिला अभी तक? इससे तो बल्कि दु:ख बढ़ गए। *नोंध* ही नहीं रखनी है ऐसी। तूने देखा नहीं ऐसा कि दादाजी *नोंध* नहीं रखते हैं?

प्रश्नकर्ता : वह तो दादा, आज अनुभव में आया। आप *नोंध* नहीं रखते हैं लेकिन, ऐसा पता नहीं चलता न!

दादाश्री : नहीं, लेकिन तू देखता तो होगा न कि ये दादाजी कुछ...

प्रश्नकर्ता : *नोंध* नहीं रखते हैं, लेकिन सब कुछ याद रहता है आपको।

दादाश्री : क्या कहा? याद होता है लेकिन *नोंध* नहीं।

प्रश्नकर्ता : उसमें क्या अंतर है, दादा?

दादाश्री : *नोंध* रखना यानी अंदर उसके लिए अंदर बैर रखा होता है। और याद मतलब हम भी समझते हैं कि इनमें इतनी निर्बलता है, उतना ही। वह निर्बलता है, इसलिए उसे आशीर्वाद देने के लिए, हम याद रखते हैं। वर्ना हमें कोई *नोंध* नहीं होती। यदि *नोंध* होगी तो मेरे खुद के लिए किसी बैर लेने की इच्छा होगी। मैं *नोंध* नहीं रखता इसलिए तू भी मेरी *नोंध* नहीं रखता है न! अगर दादाजी ने डाँटा हो या कुछ हुआ हो तब तू *नोंध* नहीं रखता है। ऐसा है यह।

प्रश्नकर्ता : डाँटें, तब भी प्रेम ही होता है।

दादाश्री : हाँ, इसलिए *नोंध* नहीं रखनी है। *नोंध* नहीं रखोगे तो आधा दु:ख तो अपने आप ही चला जाएगा।

आएगा वापस, चक्रवृद्धि ब्याज के साथ

जब बेटा आपके सामने हो जाता है, तब आप क्या करते हो?

प्रश्नकर्ता : समझाता हूँ कि यह गलत है। ऐसा नहीं करना चाहिए।

दादाश्री : लेकिन जब वह सामने हो जाए, तब आप कठोर नहीं हो जाते?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभार ऐसा हो जाए।

दादाश्री : लेकिन टकराव नहीं हो जाता? क्या बरतन कभी खड़कते ही नहीं हैं?

प्रश्नकर्ता : खड़कते हैं। तब ज़रा फुफकार मारनी पड़ती है। बस इतना ही, बाकी कुछ नहीं।

दादाश्री : फुफकारते हो? तब यदि वह सामने फुफकारे तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : ऐसा अनुभव नहीं हुआ है। वह पलटकर नहीं फुफकारता।

दादाश्री : हाँ लेकिन अगर वह सामने फुफकारे तो क्या होगा?

उसमें आत्मा नहीं है क्या? वह तुरंत समझ जाता है कि 'आँखे दिखा रहे हैं,' कहता है। जब बड़ा हो जाऊँगा तब लौटाऊँगा। सब ध्यान में रखता है। यह *नोंध* में रहता है। आपको यह नहीं मानना चाहिए कि यह खोखला है और गप्प है। बच्चों के साथ आप जितना कुछ करोगे वह सब उनकी *नोंध* में रहता है। वह उनकी *नोंध* में से बाहर नहीं जाता। बड़ा होकर लौटाता है, हाँ! चक्रवृद्धि ब्याज के साथ।

होती है फज़ीहत खुद की, अपनी भूलों के कारण

इसलिए फुफकारना नहीं चाहिए। फुफकारना

किसलिए? फुफकार तो साँप मारता है। हमें फुफकारना पड़े? फुफकारना आपको आएगा भी कैसे? फुफकार किसे कहते हैं, आप वह भी जानते नहीं हो। फुफकार में अहंकार नहीं होता। आपकी फुफकार में तो अहंकार होता है न!

इसलिए फिर फज़ीहत ही होगी न! वह आपको नालायक कहे इसलिए आप दूसरे हथियार का इस्तेमाल करते हो, फिर बचा ही क्या घर में? फिर लोग इकट्ठे हो जाते हैं और कहते हैं, 'देखो न! यह लड़का इतना पढ़ा लिखा है। इसके बाप में अक्कल नहीं है,' कहेंगे। लोग फिर अपनी अक्कल को देखेंगे। इसके बजाय अपनी अक्कल को खुद हम ही देखें तो वह क्या बुरा है? वर्ना लोग तो *तायफा* (फज़ीता) देखेंगे। लोगों को तो चाहिए ऐसा फज़ीता!

अत: यह खोज है मेरी। और बेटे से कहना कि 'भाई ले जा वह पोटली, तेरी पोटली ले जा। वह बिना तोला, बिनमापा के देते हैं, तो आपको यहीं एक तरफ रख देना है। आप कुछ बोलने गए या फिर पूरी रात तौलते रहें तो परेशानी हो जाएगी। क्या आपने कभी पूरी रात कुछ तौला है? पहले तौला होगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, कभी-कभार ऐसा हुआ है।

दादाश्री : हाँ, तौलता है। रात को तौलता है फिर हाँ, साढ़े ग्यारह-बारह बज गए हों, फिर भी तौलता है। ओहोहो, इतना बड़ा इतना बड़ा! बाट नहीं होते, कुछ भी नहीं होता, और तौलता है!

टेपरिकॉर्डर बोलता है, वहाँ क्या *नोंध* करना!

प्रश्नकर्ता : वह आपने कहा था न कि ये बच्चे इतना झगड़ते हैं, गालियाँ देते हैं, फिर भी उसे याद नहीं रहता। इसका मतलब उसे कितना मोह है कि सब भूल जाता है। और मुझे तो दस साल पहले कहा हो, तब भी मुझे लक्ष्य में रहता है और फिर बाद में उसके साथ कट कर देता है।

दादाश्री : नहीं, मैं भी कोई अलग नहीं कर देता। अलग हो रहा हो तो अलग होने देता हूँ और नहीं हो रहा हो तो फिर हम जान जाते हैं कि इसकी *नोंध* रखने जैसी नहीं है। रेडियो बज रहा हो, मुझे ऐसा लगता रहता है। बल्कि अंदर मन में हँसना आता है लेकिन उसे दिखाता नहीं हूँ। वर्ना, चिढ़ जाएगा वापस। मन में हँसना आता है कि 'यह रेडियो कैसा बज रहा है! लेकिन ऐसा ही लगता है मुझे, वह गाली दे रहा हो फिर भी। ये सभी तो रेडियो ही हैं। इसीलिए तो मैंने पूरे वर्ल्ड को खुले आम कहा है कि यह ओरिजिनल टेपरिकॉर्डर बोल रहा है। ये सभी रेडियो हैं। उसके अंदर अहंकार है न! बाकी, ये सभी टेपरिकॉर्डर ही हैं।

जब तक *नोंध*, तब तक कायम है संसार

प्रश्नकर्ता : मुद्दे की बात है। लेकिन दादा, यह तो ऐसा होता है कि संसार में *नोंध* रखनी ही चाहिए, ऐसा शिक्षण मिला हुआ है।

दादाश्री : यानी संसार में रहना हो तब तक उस शिक्षण की ज़रूरत है, लेकिन मोक्ष में जाना हो तो, '*नोंध* नहीं रखनी चाहिए' ऐसा शिक्षण मिलना चाहिए। कुछ भी *नोंध* नहीं लेनी चाहिए। यह तो अगर हम कल कुछ कह गया हो तो भी सब *नोंध* रहती है अपने पास।

प्रश्नकर्ता : इस संसार में तो कहेंगे '*नोंध* रखो। इसने क्या किया, उसने क्या किया, आपको क्या करना है!'

दादाश्री : *नोंध* रखोगे, तो आप सच में संसारी कहलाओगे। और जब तक *नोंध* है, तब तक

संसार आपको निकलने नहीं देगा। *नोंध* रखोगे तब तक निकला नहीं जा सकेगा। *नोंध* नहीं रखोगे तो संसार अस्त हुआ!

प्रश्नकर्ता : संसार में इस प्रकार से देखने की आदत हो चुकी है कि यह बहुत सतर्क व्यक्ति है, और किसी असतर्क को देखकर लगता है कि यह क्या हुआ?

दादाश्री : वह असतर्क दिखे उसका मतलब ही यह है कि 'संसार के सभी आधार गिर चुके हैं।' संसार के आधार टूट जाएँ तो संसार रहेगा? संसार के आधार टूटे तो संसार रहेगा नहीं न! संसार गिर जाएगा न! लोग सोच में पड़ जाएँगे कि यह क्या हुआ! लेकिन ऐसी असतर्कता हो तभी मोक्ष में जाया जा सकेगा। वर्ना यों ही तो वही के वही कपड़े और वही का वही वेष और ऐसे सतर्कता, वैसे सतर्कता, इसके पैसों के बारे में सतर्कता, तो उसमें तो कुछ दिन बदलते होंगे?

जो संसार में सतर्क, वह आत्मा में असतर्क

अब लोग क्या कहते हैं कि, 'ये ही मोक्ष में जा सकते हैं। ऐसी सतर्कता हो तभी मोक्ष में जाया जा सकता है।' और मैं क्या कहता हूँ कि जो सतर्क नहीं रहेगा, वही मोक्ष में जाएगा। दुकान का दिवालिया निकलेगा और हल आ जाएगा। और यदि मोक्ष में जाना हो तो यह दिवालिया निकालना पड़ेगा। यहाँ सतर्क रहना, और मोक्ष में जाना, ये दोनों एक साथ नहीं हो सकता। बगैर *नोंध*वाले कितने लोग होंगे? ये सब मुमुक्षु, मोक्ष की इच्छावाले हैं उनमें?

प्रश्नकर्ता : मोक्ष की इच्छा तो शब्दों में ही रही!

दादाश्री : इसलिए जितने लोग सर्तक हैं धर्म में, वे सभी असतर्क हैं। अत: इस संसार में जो सतर्कता रखते हैं वे धर्म में और मोक्ष में जाने के लिए, आत्मसन्मुख हुए ही नहीं हैं। इसलिए तो मैं कहता हूँ कि अध्यात्म में कौन आया? आत्मसन्मुख कौन हुआ? सभी इच्छाएँ छोड़कर हाथ खाली कर दिए हों और बिल्कुल भी *नोंध* नहीं हो, वह आत्मसन्मुख हुआ। संसार में सतर्क रहना और आत्मसन्मुख होना, दोनों एक साथ नहीं हो सकता। इसलिए भगवान ने क्या कहा है कि घर से यहाँ पर आ जा, यदि मोक्ष में जाना हो तो! किसलिए? हाँ, वर्ना घर में रहना, वह नहीं चलेगा।

यानी अपने यहाँ ऐसा है कि घर में रखकर करना है। यानी मैं क्या करवाता हूँ? *नोंध* को बंद कर दो। घर में ज़रूर रहो, लेकिन बगैर *नोंध* के! निकाल दो वह सब। यह उसी की गड़बड़ है। *नोंध* नहीं रखनी चाहिए। यह तो वहाँ संसार में रखनी थी, वह यहाँ पर नहीं रखनी है। जो यहाँ पर रखना है वह वहाँ नहीं रखना है।

सहमत नहीं, तो छूट गए

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में जाना हो तो यह *नोंध* करने की प्रकृति हो चुकी हो तो वहाँ पर क्या करे?

दादाश्री : 'चंदूभाई' से कहना कि 'अब *नोंध* मत करना।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह जो *नोंध* करने की प्रकृति है, उसका क्या करें?

दादाश्री : प्रकृति वह करे तो हमें हर्ज नहीं है! यह तो हम और 'वह,' ऐसे दोनों सहमत होकर करते हैं। 'अपनी' सहमति नहीं रही तो, फिर वह *नोंध* रहेगी ही नहीं न! वह करेगा ही नहीं फिर, ऊब जाएगा। अगर हम नहीं करेंगे तो सामनेवाला *नोंध* करेगा ही नहीं। मेरी दुकान में से आप माल ले जाओ उसकी मैं नोध नहीं रखूँ, तो आप भी नहीं रखोगे। आप ही कहोगे, 'यह *नोंध* नहीं रखते, तो मैं किसलिए रखूँ?' ऐसा नियम है न!

प्रश्नकर्ता : *नोंध* छोड़ना तब आसान हो जाता है कि जब आपकी (ज्ञानरूपी) 'जलेबी' चखने को मिले तब।

दादाश्री : हाँ, वर्ना तो नहीं छूटता।

प्रश्नकर्ता : वर्ना तब तक *नोंध* छोड़ना बहुत कठिन लगता है।

दादाश्री : अरे, लोग तो 'मर जाऊँगा, लेकिन *नोंध* नहीं छोडूँगा, पहाड़ पर से कूद जाऊँगा, लेकिन *नोंध* नहीं छोडूँगा,' कहेगा। क्योंकि ऐसा उसे लगता है कि 'उसके आधार पर जीता हूँ।' हम पूछें, 'आपका भोजन ले लेंगे तो चलेगा?' तब वह कहेगा, 'नहीं, भोजन तो चाहिए न!' लेकिन फिर भी उसे *नोंध* ही जीवित रखती है। थोड़ा भी *नोंध* करना नहीं छोड़ता।

जहाँ *नोंध* नहीं वहाँ कैसी दशा?

हमारे साथ ये इतने सारे लोग हैं, लेकिन किसी की *नोंध* नहीं। किसी से कुछ का कुछ हो जाए फिर भी *नोंध* नहीं। बाहर भी *नोंध* नहीं और अंदर भी *नोंध* नहीं। वर्ना हमें 'टेन्शन' नहीं होगा तो खड़ा हो जाएगा। यह तो रात को भी जिस घड़ी आओ उस घड़ी हम 'टेन्शन' रहित ही होते हैं न, इसलिए परेशानी ही नहीं न! हमारी तबियत अंदर नरम हो जाए तो कोई कहेगा, 'दादा, तो हँस रहे हैं!' अरे, 'टेन्शन' नहीं है इसलिए हँस रहे हैं! यानी किसी की पंचायत में नहीं पड़ना। इस देह की पंचायत में पड़े कि 'इसका ऐसा हो गया, ऐसा हो गया,' तो 'टेन्शन' खड़ा हो जाएगा न!

हमसे तो भूल नहीं चलाई जा सकती, किसी भी तरह से। भूल होने के साथ ही हमारी मशीन अंदर चलने लगती है। इसलिए भूलें रहती ही नहीं। फाइलों का समभाव से *निकाल* (निपटारा) करने से सब शुद्ध हो जाता है। क्लियरन्स कर देना है।

जहाँ व्यवस्थित, वहाँ *नोंध* नहीं

यह 'रिलेटिव' भ्रांतिवाला स्थान है। उसमें से अगर इन सबके लिए *नोंध* रखें-करें, तो वह *नोंध* किसलिए करनी है? तेरी 'वाइफ' भोजन से पहले ऐसा कह गई हो कि, 'आपका स्वभाव खराब है। मैं अब अपने पीहर से वापस यहाँ नहीं आऊँगी।' फिर भी हमें *नोंध* नहीं रखनी चाहिए। क्योंकि वह सब 'व्यवस्थित' के ताबे में है न! वह क्या उसके ताबे में है? वह उसके ताबे में है या 'व्यवस्थित' के ताबे में है? और वहाँ अब तू *नोंध* रखे कि, 'ऐसा?! इतना रौब?! चल, मैं देख लूँगा!' तो क्या होगा? हल्दी घाटी का युद्ध शुरू हो गया!

प्रश्नकर्ता : वह ऐसा कहे तो दिमाग़ फट जाएगा, बहुत 'एक्साइटमेन्ट' हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ, 'एक्साइटमेन्ट' हो जाएगा, और मानसिक लड़ाई शुरू हो जाएगी। और मानसिक लड़ाई शुरू हो जाए तो फिर मौखिक लड़ाई शुरू हो जाएगी। और मौखिक लड़ाई के बाद में कायिक लड़ाई शुरू हो जाएगी। यानी इन सबकी जड़ ही, जड़ में से ही खत्म कर दें तो? 'रूट' उड़ा दिया कि साफ! इसलिए इस झंझट में पड़ने जैसा है ही नहीं।

अत: यह *नोंध* रखने जैसा है ही नहीं। 'व्यवस्थित' किसे कहते हैं? कि किसी चीज़ की हम *नोंध* ही नहीं रखें, उसका नाम 'व्यवस्थित।' *नोंध* रखें तो उसे 'व्यवस्थित' कैसे कहेंगे?

ज्ञानी की सर्वांग तात्विक दृष्टि

हम कोई भी *नोंध* नहीं रखते। ये सारी अवस्थाएँ खड़ी होती हैं, लेकिन *नोंध* नहीं रखते।

प्रश्नकर्ता : आप क्या देखते हैं उस समय?

दादाश्री : हम 'होल फ़ोटोग्राफी' लेते हैं। 'यह अकेला ही दौड़ रहा था,' ऐसी *नोंध* नहीं रखते।

प्रश्नकर्ता : वह 'होल फ़ोटोग्राफी' में वह दौड़ ही रहा होता है न?

दादाश्री : वैसा अंदर रहता ही है, लेकिन 'होल फ़ोटोग्राफी' लेते हैं।

जगत् अवस्था रूप से बात करते हैं और मैं तात्विक रूप से बात करता हूँ। मैं तात्विक दृष्टि से देखता हूँ जबकि जगत् अवस्था दृष्टि से देखता है।

निर्दोष दृष्टि से टूटता है, *नोंध* का व्यापार

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा होता है कि यों तो अकेला होता है, कुछ भी नहीं होता। कोई भी अवसर आ जाए तब तुरंत ही ऐसा रहता है कि शुद्धात्मा.. यानी कि निर्दोष किस प्रकार से हैं उसकी जागृति चल ही रही होती है और वह बात पूरी होने के बाद में, पंद्रह दिन बाद जब किसी ने बात निकाली हो तब जो वाक्य निकलता है उस पर से पता चलता है कि अंदर ऐसी *नोंध* हो गई थी कि उसमें ऐसा ही था वैसा ही था। उसके आधार पर फिर प्रतिक्रमण होता है। कुछ भी होने पर इस प्रकार से निर्दोष दृष्टि सेट की हुई है।

दादाश्री : कुछ *नोंध* हो गई हो वह फिर बाद में पता चलती है। किसी का दोष दिखना बंद हो जाए तो हो गया कल्याण। दोष है ही नहीं किसी का।

प्रश्नकर्ता : इसमें तो कैसे रखा हुआ है कि प्रकृति से जो व्यवहार हो जाता है उसमें, उसके पीछे आत्मा दृष्टि रखता ही है अर्थात् ऐसा नक्की ही रहता है कि इसमें कोई भूल हो गई है इसकी, अंदर प्रकृति में। किसी का भी दोष नहीं दिखना चाहिए।

दादाश्री : पिछले साल दिखा था क्या? एक, दो घंटे जितना?

प्रश्नकर्ता : वह तो सब चला ही था न!

दादाश्री : क्या दो घंटे तक लगातार दिखा था? दोष यदि दिखें तो एक गुणस्थानक तक ही दिखने चाहिए, उससे आगे नहीं दिखने चाहिए। फिर तुरंत पता चल जाना चाहिए कि यह दोषित नहीं है। ये तो भूल हो गई। तुझे एक *गुंठाणे* तक दिखे या दो *गुंठाणे* तक..तीस दिन तक? सामनेवाले को अपना दोष दिखे तो हमें उसका दोष देखना चाहिए या क्या देखना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : हमें तो शुद्ध ही देखना चाहिए।

दादाश्री : हमें शुद्ध ही देखना चाहिए। हम पर कोई जोखिम नहीं है अब। उसके बाद नहीं होता न ऐसा?

प्रश्नकर्ता : अब तो ऐसा ज़बरदस्त रहने लगा है कि किसी भी हिसाब से ऐसे गुनाह में नहीं आना चाहिए। ऐसा जोखिमवाला गुनाह!

दादाश्री : यदि किसी के दोष, दिखने बंद हो जाएँ, तो हो गया कल्याण। ये जो दिखते हैं, वे भी एक *गुंठाणे* तक ही। एक *गुंठाणे* के बाद तुरंत ध्यान में आना ही चाहिए कि यह भूल हो गई। तब तक तो दो-चार गुणस्थानक बीत गए थे, है ना?

प्रश्नकर्ता : इंतज़ार करते हैं, ढँकी हुई होगी तब भी टाइम बीत जाता है, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : ऐसा सब याद है। जागृति रहती है, इंतज़ार करते हैं और फिर भी उस स्थिति में हाज़िर नहीं हो जाता।

प्रश्नकर्ता : और फिर भी उसके बाद मुझे प्रतिक्रमण करना पड़ते हैं, उपयोग चूक गया उसके एवज में। यानी कि दोष दिखाई नहीं देता, फिर भी उपयोग रखना चूक जाऊँ, ऐसा हो जाता है। क्योंकि खुद ने *नोंध* नहीं ली है उस बारे में। ऐसा होता है। अभी तक *नोंध* नहीं ली है, क्यों।

दादाश्री : *नोंध* ली हुई होती है। लेकिन खुद

समझदार है न! इसलिए दोष ऐसे खुला दिखाई देता है। ऐसा सब कुछ करता है और कहता है कि किसी का दोष नहीं है। आप कर रहे थे उस समय आपका दोष नहीं था।

प्रश्नकर्ता : यानी क्या कहना चाहते हो?

दादाश्री : जिसे आपका दोष दिखता है, वह जो है न उसके देखने में फर्क है, इसलिए निमित्त को ही काटने दौड़ता है। आँखों से जो दिखता है, पूरा जगत् उसी को सत्य मानता है। वही भ्रांति है। वह सत्य, सत्य नहीं है ऐसा जानना, वही ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : वह वाणी सुनेंगे, तभी दिन बदलेंगे ऐसा है। वर्ना दिन बदलें ऐसा है ही नहीं।

दादाश्री : दादा कभी कुछ नहीं कहते, लेकिन जब डाँटे तब पता चलता है।

प्रश्नकर्ता : डाँटे तब, मैंने वो कहा था न! मतलब क्या आशय है? और वही कहना है..'कौन सी बात पहुँचाना चाहते हो,' वह दृष्टि कहाँ तक पहुँचाना चाहते हो, ऐसा चल रहा होता है कि 'मुझे ऐसा क्यों कह रहे हो।' ऐसा कहकर, जो दृष्टि खोल देते हैं न! उससे पूरा रास्ता खुला हो जाता है। फिर तो ये शब्द ही प्रत्याख्यान करवा देते हैं, बात का।

दादाश्री : खोलकर कह दे वह ठीक है लेकिन अभी आगे बहुत आनेवाला है, नहीं क्या?

प्रश्नकर्ता : बहुत।

दादाश्री : अभी तक स्टेशन नहीं आया है?

प्रश्नकर्ता : उसका खुद प्रतिक्रमण करे, निश्चय करे, वह होता था। जबकि यहाँ पर तो एक शब्द निकले तो हमेशा के लिए हो जाता है।

दादाश्री : दोष नहीं दिखते, यह तो बहुत बड़ी बात सीख गए। तो पूरा कल्याण ही हो गया। फिर बाकी कुछ रहा ही नहीं देखने को। यह अहंकार उसमें आपत्ति उठाता है।

प्रश्नकर्ता : वो बात निकली थी न कि दोष होता रहता है और एक तरफ प्रतिक्रमण होता रहता है और दूसरी तरफ वापस दोष होता रहता है। तो अभी कहा था कि यह दोष देखने का धंधा ही अहंकार का है, यानी दोष होते रहने का कारण मूलत: अहंकार ही है?

दादाश्री : किसी का भी दोष दिखाई दिया कि तभी से स्व-उपयोग नहीं रह पाता। इस जगत् में किसी का भी दोष है ही नहीं। जो दिखाई देता है, वह भ्रांति है। ऐसा दिखता है?

प्रश्नकर्ता : वैसे किसी का दोष नहीं दिखता लेकिन जब व्यवहार खड़ा होता है न, तब बात-बात में ऐसे शब्द निकल जाते हैं जैसे कि दोषित दृष्टि से अंदर उसकी *नोंध* हो गई हो। जब ऐसे शब्द निकले तब पता चलता है कि अंदर ऐसी *नोंध* कर रखी है 'वह दोषित है।' जब ऐसी बातचीत होती है तब पता चलता है कि ऐसा वाक्य क्यों निकला क्योंकि अंदर *नोंध* हो गई थी कि यह दोषित है। इस प्रकार से इसने दोष किया है और फिर बाद में उसका प्रतिक्रमण भी होता है।

दादाश्री : भूल करे और कभी किसी को दोषित देखा करे तो, उसके जैसा जोखिम इस दुनिया में और कुछ भी नहीं है। क्योंकि फिर स्व-उपयोग नहीं रह सकता। मैं शुद्धात्मा हूँ, ऐसा सेट करे तब भी स्व नहीं कहलाएगा। मैं शुद्धात्मा हूँ, ऐसा देखा करे, फिर भी स्व-उपयोग नहीं कहा जाएगा। चोखा सम्यक दर्शन नहीं है। सम्यक दर्शन किसे कहते हैं? जब किसी की भी भूल नहीं दिखें तब।

नहीं है दोषित कोई इस जगत् में

कोई दोषित है ही नहीं फिर क्यों दोष देखने लगते हो? वास्तव में कोई एक्ज़ेक्टली दोषित है

ही नहीं? गणित की दृष्टि से देखने जाएँ न तो दोषित है ही नहीं लेकिन लोगों को गणित नहीं आता है, इसलिए दोषित दिखाई देते हैं। और लोग जो भी देखते हैं वह उनकी अपनी दृष्टि है, ज्ञानी की दृष्टि हैं ही नहीं उनके पास। इसलिए अब दोषित दिखाई देते हैं। यदि उसे खुद को कुछ पत्थर लग जाए तब इधर देखकर ढूँढ़ निकालता है कि हू इज़ दी रिस्पोन्सिबल। तब लोग कहते हैं, 'उस बच्चे ने मारा,' तब फिर बच्चे को दोषित मानता है। और यदि लोग कहते हैं कि नहीं, यह पहाड़ पर से आकर गिरा है, तब लेट गो कर देता है कि 'अब तो कोई है नहीं। मेरा ही हिसाब है,' कहेगा। मेरा हिसाब कहकर लेट गो करता है। पहाड़ तो फेंकेगा नहीं। अब यही कारण है कि जब तक खुद सामनेवाले को गुनहगार नहीं ठहराता तब तक बुद्धि स्थिर नहीं होती। अब जब तक वह बुद्धि स्थिर नहीं होती, तब तक खाना नहीं भाता, रात को नींद भी नहीं आती। इसलिए हम क्या कहते हैं कि पूरा जगत् निर्दोष है। यानी कि भूल मेरी ही है। तब बुद्धि स्थिर हो जाएगी। बद्धि स्थिर हो जाएगी या नहीं हो जाएगी? भूल खुद की ही है ऐसा स्वीकार करे ऐक्ज़ेक्टली, तो बुद्धि स्थिर हो जाएगी। वर्ना किसी को गुनहगार ठहराएगी तब स्थिर होगी। अब गुनहगार ठहराने में क्या होता है? जन्म बढ़ते जाते हैं, संसार में, भटकानेवाले प्रश्न। और ये खुद अपनेआप को गुनहगार ठहराने से हम छुटकारा पा लेते हैं। इसका कारण यह है कि यह वास्तविक ज्ञान है, और वह रिलेटिव, भ्रांतिवाला ज्ञान है। इसमें से यह जो *नोंध* रखते हैं, वह किसके लिए?

कभी भी *नोंध* रखने की ज़रूरत नहीं है। उसका क्या कारण है कि जगत् निर्दोष ही है, जीवमात्र। जगत् के, तमाम जीव साँप, बिच्छू, बाघ, सिंह सभी निर्दोष ही हैं। हमें निर्दोष ही दिखाई देते हैं। लेकिन आपको कौन सी दृष्टि से दिखलाऊँ? फिर वह आत्मा, वह तो शुद्ध ही है न?

प्रश्नकर्ता : शुद्ध।

दादाश्री : इंसान अभी जो कुछ खराब कर रहा है, वह खुद की इच्छा हो या इच्छा नहीं हो लेकिन कर्म का उदय करवाता है। वह खुद नहीं करता बेचारा। इसलिए इसमें उसका गुनाह नहीं है अत: हम खुद का गुनाह मानते हैं।

अब कर्म का उदय अर्थात्, अपने कर्म का उदय होगा तभी ही वह टकराएगा। वर्ना नहीं टकराएगा। इसलिए वह निर्दोष ही है। ऐसा आपको समझ में आया न कि निर्दोष है, इसलिए *नोंध* रखने की ज़रूरत ही नहीं है न?

आज के ज्ञान से अभिप्राय अलग

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। लेकिन कई बार ऐसा होता है कि खुद का अभिप्राय जुदा होता है और मन अलग दिखलाता है। अर्थात् अंदर विरोधाभास खड़ा हो जाता है।

दादाश्री : संघर्षण है, इसीलिए यह पूरा जगत् चल रहा है, मन कहता है कि *नोंध* लेनी है और आज का ज्ञान तुम से कहता है कि *नोंध* नहीं लेनी है। उसका वह संघर्षण चलता ही रहता है।

मन तो पिछले जन्म का अभिप्राय है और आज के ज्ञान के आधार पर यह अभिप्राय है।

जागृति की ज़रूरत है, *नोंध* की नहीं

प्रश्नकर्ता : संक्षेप में, जागृति रहेगी तो *नोंध* की 'मशीनरी' ही नहीं रहेगी।

दादाश्री : नहीं रहेगी। जागृति मंद है उसी का तो झंझट है न! जागृति लानी है, *नोंध* नहीं रखनी है। ऐसा यदि वह खुद करे न, तो उतना ही जागृत हो जाएगा न! नहीं तो हमारा देखकर किया जा सकता है। इन 'दादाजी' को कोई ऐसा-वैसा

कुछ कह जाए, फिर भी मुँह की रेखा तक नहीं बदलती। उसका क्या कारण? अरे, यहाँ क्या 'रिज़ल्ट' ढूँढ रहे हो? मैंने उस पर लेख ही नहीं लिखा न! उस पर कहाँ 'ऐसे' निबंध लिखूँ? मैं तो *नोंध* ही नहीं रखता न! ऐसे तो सब कितने ही आते हैं और जाते हैं। फिर भी मैं उन्हें मुँह पर जो मैं कह देता हूँ, वैसा मैं मानता नहीं हूँ। है तो वह शुद्धात्मा! बाह्य निर्दोष! आंतरिक शुद्धात्मा! ऐसी दृष्टि रखकर हम उसे मुँह पर कुछ कहते हैं। और यों तो हमारी यह पाटीदारियों की भाषा, भाषा तो जाती नहीं है न! लेकिन *नोंध* नहीं रखनी चाहिए। यानी बात को समझना ही है।

इसलिए सिर्फ *नोंध* के बारे में तो हमें दस-पंद्रह दिन में बोलना ही पड़ता है। सावधान करते रहना पड़ता है। यह *नोंध* रखने से तो सत्ता भी पुद्गल की ही रहती है, खुद की सत्ता नहीं रहती। बिल्कुल भी सत्ता नहीं रहती।

दादाजी का नाम लेकर धो डालो

जो *नोंध* नहीं करे तो जगत् में वीतराग बन जाएगा। *नोंध* नहीं करे वही वीतराग कहलाता है! तो हम ऐसा नहीं कहते कि 'तू संपूर्ण *नोंध* मत करना,' लेकिन थोड़ी बहुत कम करेगा, तब भी बहुत हो गया,

तब फिर अपने को ऐसा लगेगा कि वीतराग हो गया लगता है। उस पर से हम ऐसा मानते हैं कि कुछ वीतराग दशा लग रही है। फिर भी वास्तव में ऐसा नहीं बोल सकते। कि 'वीतराग है'

(वह कब होगा?) जब राग-द्वेष कम हो जाएँगे तब। वर्ना *नोंध* किए बगैर रहेंगे ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : क्योंकि वह *नोंध* ही परेशान करती रहती है न, दादाजी? वह *नोंध* ही चक्कर लगवाया करती है न?

दादाश्री : *नोंध* ही चक्कर लगवाया करती है।

तुरंत बंद नहीं हो जाती न? मिथ्यात्व का वह भाग बड़ा होता है इसलिए एकदम से बंद नहीं होगा। धीरे-धीरे दुकान खाली कर देनी है।

प्रश्नकर्ता : कुछ भी *नोंध* हो जाए तो फिर मन मुक्त नहीं रहता, ऐसा है।

दादाश्री : लेकिन अब वह राग-द्वेष रहित *नोंध* कहलाती है। उस राग-द्वेष रहित *नोंध* की कोई कीमत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : नहीं लेकिन जब पता चलता है कि यह *नोंध* हो रही है। तब मन मुक्त नहीं रहता, हास्य उत्पन्न नहीं होता, ऐसा सब पता चलता है।

दादाश्री : इसलिए कहता हूँ कि *नोंध* लेना। *नोंध* लेना और रात को दादा भगवान का नाम याद करके कह देना कि इतना हो गया है यह इस प्रकार धो देना, और क्या? क्षमा माँग लेना।

जिसे मोक्ष में जाना हो उसे *नोंध* करना कैसे पुसाएगा?

नोंध की ही नहीं जाए, फिर परेशानी ही कहाँ रही? मोक्ष में जाना और *नोंध* करना, दोनों साथ में नहीं हो सकता न! अब लोग क्या *नोंध* रखे बगैर रहते हैं? और मोक्ष में जाना हो तो *नोंध* छोड़ देनी पड़ेगी, *नोंध* की 'बुक' निकाल देनी पड़ेगी। *नोंध* संसार को रोशन करती है, लेकिन वह संसार में से निकलने नहीं देती। और हमें तो अब *नोंध* करने की झंझट ही नहीं, किताब पकड़ने की ही ज़रूरत ही नहीं, पेन पकड़कर लिखने की क्या ज़रूरत है? तो हम भले-भोले ही अच्छे कि *नोंध* नहीं रखते। मेरी भी *नोंध* कोई नहीं रखता। इसलिए हम छूट जाते हैं, हल आ जाता है। *नोंध* ही नहीं और झंझट भी नहीं!

हम ज़रा सी भी *नोंध* नहीं रखते। हो जाए, उसके बाद *नोंध* नहीं रखनी चाहिए। *नोंध*पोथी ही निकाल दी है।

प्रश्नकर्ता : तारीफ़ हो, फूल चढ़ाए उसकी भी *नोंध* नहीं, और पत्थर मारे उसकी भी *नोंध* नहीं?

दादाश्री : हाँ। वर्ना *नोंध*पोथी इकट्ठी होते-होते सारा उल्टा परिणाम आएगा। और उस तरफ की दृष्टि बदल जाएगी आपकी। वह जब आपको देखे न, तो उसे आपकी दृष्टि बदली हुई लगेगी। *नोंध* हुई उसका क्या सामनेवाले को पता नहीं चलेगा कि 'इसने *नोंध* रखी है, पिछली बार मैंने थोड़ी बात की थी उसकी *नोंध* है इन्हें,' ऐसा तुरंत पता चल जाता है। इन लोगों को देखना बहुत आता है, और कुछ तो नहीं आता। लेकिन इस प्रकार सामनेवाले की आँख देखना बहुत आता है कि किस चीज़ की *नोंध* रखी है। लेकिन वह हमारी आँख में वीतरागता देखे तो तुरंत समझ जाते हैं कि 'दादा' है, थे वैसे के वैसे ही हैं! हमारी आँख में वीतरागता दिखती है।

छलके करूणा, उस वीतरागता में

प्रश्नकर्ता : दादा, उन आँखों में निष्कारण करुणा देखने को मिलती हैं।

दादाश्री : हाँ वही, दूसरा कुछ मिलनेवाला नहीं है न! कारण, कारणवाली करुणा हो न तो कार्य होता है। निष्कारण करुणा। आत्मा पर ही दृष्टि रहती है। उसके *पुद्गल* पर दृष्टि नहीं रहती है। फिर भी व्यवहार सँभालते हैं कि यह व्यक्ति सत्संग के लिए हितकारी है। इसलिए कहते हैं, 'आइए, पधारिए,' उन्हें बिठाते हैं, लोगों को बिठाते हैं। जो दूसरों की भलाई करे, ऐसे हों, उनसे बात करते हैं। व्यवहार तो निभाना पड़ता है। हम व्यवहार को सँभालते हैं, और वह जो है न! तीर्थंकर भगवान! वे नहीं सँभालते। खटपट नहीं है न! यह खटपट है हमारी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह खटपट का विभाग, थोड़ा चार प्रतिशत रह गया है, इसीलिए तो हम सभी, इस तरह आपके पास आ सकते हैं न!

दादाश्री : हाँ, वही, उसी की वजह से तो मैं अटका हुआ हूँ कि लोगों का कल्याण कैसे हो, मेरे जैसा? उसी के लिए यह खटपट है। खटपट भी उसी के लिए है न! यह सारा व्यापार इसी वजह से है न! लेकिन लोगों का कल्याण तो हो जाएगा न! लोगों को वीतरागता देखने को मिलेगी यहाँ पर।

ये सभी बातों का सार मैं कह रहा हूँ, और यह सब पूरा अर्क ही है। यह सारा ह3मारे अनुभव का निचोड़ है। अब इन बातों को सुनते रहने से सबकुछ अपने आप छूट जाएगा। इसके लिए कोई क्रिया नहीं करनी है कि दो उपवास करना या ऐसा करना, वैसा करना, कुछ भी नहीं। सिर्फ बात को समझने की ही ज़रूरत है।

- जय सच्चिदानंद

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

२१-२८ दिसम्बर : अडालज त्रिमंदिर संकुल के दादानगर में आठ दिन का सत्संग पारायण हुआ। जिसमें १०,००० जितने महात्माओं ने अनुपम लाभ लिया। आप्तवाणी-८ और आप्तवाणी-७ पर वाँचन और प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ। पूज्य श्री के हस्ते आप्तवाणी-८ (अंग्रेजी), आप्तवाणी-७ (हिन्दी), दादा भगवान भाग-4 (चित्रकथा) तथा पंजाबी भाषा में परिचय पुस्तक का विमोचन हुआ। जर्मनी, स्पेन, अमरिका, यू.के., दुबई, आफ्रिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड वगैरह देशों से ५०० जितने एन.आर.आई तथा विदेशी महात्माओं ने भाग लिया। वातावरण में अत्यधिक ठंड होने के बावजूद सत्संग के लिए महात्माओं में अनूठा उत्साह था। नाताल के दिन जर्मन तथा अन्य वेस्टन महात्माओं द्वारा अंग्रेजी में सुमधुर पद प्रस्तुत किए गए। पूज्य श्री द्वारा वाचन तथा प्रश्नोत्तरी दौरान अजोड हाव-भाव और सचोट उत्तरों से महात्माओं को आत्म संबंधी तथा व्यवहार ज्ञान की समझ से आनंदमयी संतुष्टि का अनुभव प्राप्त हुआ।

२९ दिसम्बर : अडालज त्रिमंदिर के ग्यारहवें प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव होने के उपलक्ष्य में आयोजित श्री सीमंधर स्वामी भगवान की प्राण प्रतिष्ठा पूज्य श्री के हस्ते हुई। ७ से ३१ ईंच तक की अलग-अलग साइज़ के भगवंतों की लगभग ११०० प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हुई और इतवार के दिन होने से ७ हज़ार से ज़्यादा महात्माओं ने भाग लिया। जिन महात्माओं की मूर्ति की प्रतिष्ठा हुई, वे सभी महात्माओं ने भगवान का प्रक्षाल-पूजन किया और आरती के बाद महात्माओं ने भगवान को शीश पर रखकर गरबा किया और उस समय अद्‌भूत आनंद का वातावरण सर्जित हुआ था। रात को त्रिमंदिर में स्वामी के पदों की भक्ति आयोजित हुई।

३१ दिसम्बर : २०१४ के नए साल की पूर्व संध्या को त्रिमंदिर के जायजेन्टिक हॉल में रात १०-१२ भक्ति का विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिनमें विदेशी महात्माओं ने भी दादाई पद अंग्रेजी में गाए। रात्रि १२ बजे पूज्य श्री ने सभी महात्माओं को नव वर्ष की शुभेच्छा तथा 'आनंद में रहो और आनंद में रखो' ऐसा संदेश दिया।

२ जनवरी : परम पूज्य दादाश्री की २६वी पुण्यतिथि पर पूज्य श्री ने संदेश दिया कि 'ज्ञानियों की मृत्यु होती ही नहीं। एक देह छोड़कर दूसरी देह से खुद का और जगत् कल्याण का कार्य चालू ही रखते हैं।' किस तरह से जगत् का कल्याण हो और लोग मोक्षमार्ग की ओर जाए वही उनका *नियाणां* होता हैं। रात ८-१० दौरान विशेष भक्ति कार्यक्रम में एक घंटा स्वरूप कीर्तन भक्ति और एक घंटा दादाई पद की आराधना हुई।

४-५ जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल के दादानगर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान १५०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सह्याद्रि चेनल पर मराठी सत्संग देखकर बहुत सारे महाराष्ट्रीयन मुमुक्षोओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और कुछ विदेशी महात्माओं ने भी आत्मज्ञान प्राप्त किया।

७-९ जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल के जायजेन्टिक हॉल में 'श्री सीमंधर स्वामी' तथा 'दादा भगवान' की 'आरती' पर पूज्य श्री द्वारा विशेष सत्संग का आयोजन हुआ।

१०-१२ जनवरी : विवाहित बहनों के लिए आयोजित तीन दिन की विशेष सत्संग शिविर में ३६०० जितनी बहनों ने भाग लिया। पूज्य श्री ने नोंध, पति के साथ राग-द्वेष वगैरह पर दादाई ज्ञान की गहरी समझ दी। आप्तपुत्री बहनों ने भी अलग-अलग ग्रुप में शिविरार्थी बहनों के साथ सत्संग किया। यह शिविर के दौरान स्त्री प्रकृति में से बाहर निकल ने के लिए उपयोगी ऐसे विषयों पर पूज्य श्री के हस्ते डी.वी.डी का विमोचन हुआ।

१७-१९ जनवरी : विवाहित भाईयों के लिए आयोजित तीन दिन की विशेष सत्संग शिविर में १८०० जितने महात्मा भाईयों ने भाग लिया। पूज्य श्री द्वारा डी.वी.डी का विमोचन हुआ। पूज्य श्री द्वारा ब्रह्मचर्य (उत्तरार्ध) पर पारायण तथा 'मान-विषय' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुआ। आप्तपुत्रों ने अलग-अलग ग्रुप में महात्मा भाईयों के साथ सत्संग किया। बहुत सालों के बाद ब्रह्मचर्य से संबंधित सत्संग की डी.वी.डी का पूज्य श्री के हस्ते (परणित भाईयों की शिविर-वर्ष २०१२) विमोचन हुआ। अगले साल से विवाहित भाईयों तथा बहनों की शिविर ५ दिन की करने का निर्धारित किया है।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के चंडीगढ में सत्संग कार्यक्रम

दिनांक : 20 फरवरी, **समय** : शाम 6-30 से 8-30 **संपर्क** : 9872188973
स्थल : सनातन धर्म मंदिर (धर्मशाला), सेक्टर 32-डी, चंडीगढ.

दिनांक : 21 फरवरी, **समय** : शाम 4 से 5-30 **संपर्क** : 9876731321
स्थल : हाउस नं. 138, सेक्टर-4, खरर, मोहाली, चंडीगढ.

दिनांक : 21 फरवरी, **समय** : शाम 7 से 8-30 **संपर्क** : 9316172819
स्थल : GH4A, सेक्टर 20, पंचकुला, H. No. 2602, जलवायु विहार, चंडीगढ.

दिनांक : 22 फरवरी, **समय** : शाम 6 से 8 **संपर्क** : 9816612700
स्थल : दीपक स्पिन्नर्स ली., स्टाफ कोलोनी, 121, इन्डस्ट्रीयल एरिया, बड्डी, जिला- सोलन, चंडीगढ.

दिनांक : 23 फरवरी, **समय** : सुबह 10 से 12 **संपर्क** : 9501009538
स्थल : Flat No. 504-A, GH-10, सेक्टर 24, पंचकुला, चंडीगढ.

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हररोज - रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन - पटना'** पर सोम से शुक्र शाम ६-३० से ७ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन - गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

UK - **'विनस'** (डीश टीवी चेनल 805-युके) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'साधना'** पर हर रोज़ - **सुबह ७-४० से ८-१० और शाम ७-१० से ७-४०** (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन-नेशनल'** पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन -गिरनार'** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

USA - **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST (गुजराती में)

USA-UK - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

चंडीगढ़

८ मार्च (शनि) -शाम ६ से ८-३० **सत्संग** तथा **९ मार्च** (रवि), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : टागोर थीयेटर, सेक्टर-18, सरकारी मोडेल हाइ स्कूल के सामने, चंडीगढ़. **संपर्क:** 8427413624

सुरेन्द्रनगर

१४ मार्च (शुक्र) - शाम ४-३० से ७ - **सत्संग** तथा **१५ मार्च** (शनि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**
स्थल : त्रिमंदिर, सुरेन्द्रनगर-राजकोट हाई-वे, लोक विद्यालय के पास, मुली रोड. **संपर्क :** 9879741582
सूचना : उपरोक्त कार्यक्रम में भोजन व रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हैं ।

सुरेन्द्रनगर त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. १६ मार्च २०१४ (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा : सुबह ९-३० से १, **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती :** शाम ४ से ७, **भक्ति :** रात ९ से १०
स्थल : त्रिमंदिर, सुरेन्द्रनगर-राजकोट हाई-वे, लोक विद्यालय के पास, मुली रोड. **संपर्क :** 9879741582

विशेष सूचना :

१) प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।
२) कार्यक्रम में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है ।

अडालज त्रिमंदिर

दि. **१९ मार्च** (बुध), सुबह १० से १२ - **पू. नीरू माँ की 8वी पुण्यतिथि पर स्पे. सीडी** तथा **अन्य कार्यक्रम**
शाम ४-३० से १० - **आप्तसिंचन साधकों की समर्पण विधि** तथा **विशेष भक्ति कार्यक्रम**

मुंबई

२-३ मई (शुक्र-शनि) - शाम ६ -३० से ९ **सत्संग** तथा **४ मई** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : अंधेरी स्पोर्ट्स कोम्प्लेक्ष, जे. पी. रोड, अंधेरी (वे). **संपर्क :** 9323528901

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१४

सत्संग शिविर : दि. २९ मई से १ जून २०१४
ज्ञानविधि : दि. ३१ मई
तीर्थ यात्रा : दि. २ जून सुबह से शाम तक

बच्चों-युवकों के लिए इस शिविर के दौरान अलग से विशेष संस्कार सिंचन शिविर का आयोजन किया गया है।

सूचना : शिविर में भाग लेने के लिए दि. १५ मार्च से १५ मई २०१४ तक अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से शाम ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाए।

यदि आप 2 जून को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 3 जून का लें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, **अहमदाबाद:** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** 9924343335, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिर:** (02672) 262300, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885, **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

फरवरी 2014
वर्ष - ९, अंक - ४
अखंड क्रमांक - १००

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

बहुत सावधान रहने जैसा है नोंध रूपी बड़े दोष से

"यह तो, फिर वाइफ को दबाकर रखता है कि 'यदि तू ऐसा नहीं करेगी तो नहीं चलेगा।' ओहोहो, आया बड़ा पति! इसलिए फिर वह नोंध करती है कि 'ज़रा टाइट है, इसलिए मुझे डरा रहा है लेकिन जब थोड़ा नरम हो जाएगा, तब मैं डराऊँगी।' यानी स्त्री जाति तो कलेजे पर अंकित करके रखती है। इसीलिए कभी कुछ बोलना ही मत। पुरुष ऐसी बातें भूल जाते हैं लेकिन स्त्रियों की नोंध तो पूरी ज़िंदगी रहती है। वह कह भी देती है कि उस दिन आपने ऐसा कहा था, वे घाव मेरे दिल पर लगे हैं। अरे! बीस साल हो गए, फिर भी नोंध ताज़ी! बेटा बड़ा हो गया, शादी लायक हो गया, फिर भी वह बात संभाले रखी। सभी चीज़ें सड़ जाती हैं, लेकिन इनकी चीज़ें नहीं सड़तीं। स्त्री को यदि हमने कुछ दिया हो तो वह असल जगह पर रखे रखती है, कलेजे में। इसलिए देना मत। देने जैसी चीज़ें नहीं है ये, इनसे सावधान रहने जैसा है।

-दादाश्री"

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.